NEW UPDATE!



जो अल्लाह को राज़ी करना चाहते हैं वही कामयाब।

(सूरह रूम, आयत नं. 38)

अपनी चाहत बदलो

दुनियावी चाहत से हटकर **दीनी चाहत** की ओर



चाहत बदलने से हालात बदलेगें

खुदा ने आजतक उस
क़ौम की हालत नहीं बदली
न हो चाहत जिसको खुद
अपनी हालत बदलने का

मुअल्लिफ :
सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी

www.ghausokhwajaorazatrust.com

GKR Digital PUBLISHER

GKR Digital PUBLISHER

About Publisher

GKR (Ghaus o Khwaja o Raza) Digital Publisher ek Sunni Islamic digital publishing platform hai jo Islami kitaabon aur taleemaat ko nayi soch aur updated andaz me logon tak pahuchane ka kaam karta hai. Yah platform khas kar Islami kitaabon ko **Hindi aur Roman** script me translate karta hai, taaki ilm-e-deen (Islamic knowledge) ko aam logon aur khaas tabqe (awam aur khwas) tak asaan aur samajhne layak format me pesh kiya ja sake.





Join Team Member

Agar aap GKR ke saath judna chahte hain ya is platform ke zariye koi kitaab Translate/publish karana chahte hain, to yah ek behtareen moka hai ilm-e-deen ko doosron tak pahunchaane ka.

Founder :
Writer | Translator | Creator | Designer | Composer
Sufi Anwar Raza Khan Qadri
9534124663 (GP/Phone)
(Mureede Tajush Sharia)
Ba Faize Roohani Huzoor Khawaja Garib Nawaz

www.ghausokhwajaorazatrust.com

Donate to Islam
Anwar Khan
Indian Bank 8894

किताब नाम	: **अपनी चाहत बदलो** (Updated)
मुअल्लिफ़	: सूफ़ी अनवर रजा खान क़ादरी
बानी	: Ghaus o Khwaja o Raza Trust
भाषा:	: हिन्दी
कैटेगरी	: इस्लाहे बातिन (Motivational)
कंपोज़िंग और डिज़ाइनिंग	: सूफ़ी अनवर रजा खान क़ादरी
PDF	: GKR Digital Publisher
साल	: अगस्त 2026
पेजेस	: 68
किताब नं.	: 9

इस रिसाले की प्रूफ रीडिंग की गई है फिर भी अगर कोई ग़लती पाएँ इस नंबर पर एस एम एस या व्हाट्सप्प करें ताके हम उसकी दुरुस्तगी कर दें।

हम्द व सना

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तमाम तारीफें अल्लाह त'आला के लिए

- जो 1 माबूदे हक़ीक़ी है । उसका कोई शरीक नहीं, न ज़ात में, न सिफ़ात में, न अफ़आल (काम) में, न अहकाम में, न अस्मा में
- जिसने अपनी कुदरत से हमे तमाम मख्लूक में सबसे अफ़ज़ल यानी इंसान बनाया
- जिसने अपने फ़ज़्लों करम से हमे तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल अपने हबीब का उम्मती यानी मुसलमान बनाया
- जिसने अपने रहमो करम से हमे इस उम्मत के सवाद ए आज़म में से यानी सुन्नी बनाया।
- जिसने दौर के मुताबिक अपने वली हुज़ूर आला हज़रत के जरिये हमे सुन्नियों में अफज़ल यानी बरैलवी बनाया।
- तमाम तारीफें उस ज़ात के लिए है जिसके लिए हम बरैलवी हक़ वालों से महब्बत और बातिल फ़िरकों से नफ़रत करते है।
- दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया व सलामती हो असहाब पर और नबी के आल पर और सलामती हो उन तमाम मोमिनीन व मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

बाब 1 : चाहत की हक़ीक़त

बाब 2 : दुनिया की चाहत का अंजाम

बाब 3 : तर्के दुनिया और तौबा की चाहत

बाब 4: नबी ﷺ से मुहब्बत की चाहत

बाब 5 : चाहत बदलने के अमली तरीके

हालात-ए-मुअल्लिफ़

नाम : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी

पैदाइश : 21 जनवरी 1991, रांची (झारखंड)

तालीम : हिदायतयाफ्ता, फ़ैज़याब, उम्मी आलीम और मुतालए क़ुतुब।

मसलक : अहल-ए-सुन्नत वल-जमाअत (मसलक-ए-आला हज़रत)

शैख़-ए-तरीक़त : हुज़ूर ताजुश्शरिआ अख़्तर रज़ा खान क़ादरी बरेलवी

दीनी ख़िदमात : हक़ीक़ी पीरी-मुरीदी, सुन्नी इस्लामी किताबों की तस्नीफ़, हिन्दी और Roman बुक Translation, बुक तकसीम, वाज़ व नसीहत, सुन्नी अक़ीदे की इशाअत, बातिनी इस्लाही मिशन, सोशल मीडिया के जरिए दीन की ख़िदमत, बानी ए ट्रस्ट Ghaus o Khwaja o Raza Trust

ख़िदमात ए ख़ल्क़ : रूहानी इलाज, यतीम खाना, रोजगार, नेक मशवरा, लंगर खानी, माली मदद, टूटे हुए दिल को जोड़ना |

हालात-ए-मुअल्लिफ़ : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी का ताल्लुक़ झारखंड के शहर रांची से है। अव्वलन Professional प्राइवेट नौकरी करते थे बाद में अल्लाह त'आला की याद, फ़िक्र ए आख़िरत और खिदमाते दीन के लिए नौकरी को कुर्बान करके कपड़े का तिजारत शुरू किया।

शख़्त आजमाइश : अल्लाह त'आला अपने नेक बंदों को यूँ ही नहीं छोड़ देता, बल्कि कभी-कभी उन्हें ऐसी आज़माइशों से गुज़ारता है जो ज़ाहिर में तकलीफ़देह होती हैं, लेकिन उन्हीं के ज़रिये वह अपने बंदे का दिल दुनिया से हटाकर अपनी तरफ़ मोड़ देता है। क़ुरआन-ए-करीम में इरशाद होता है:

तर्जुमा : **"और हम ज़रूर तुम्हें कुछ डर, भूख, माल, जानों और फलों की कमी से आज़माएँगे; और सब्र करने वालों को खुशख़बरी सुना दो।"** (सूरह अल-बक़रह, 2:155)

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: **"जिसके साथ अल्लाह त'आला भलाई का इरादा करता है, उसे मुसीबत में डालता है।"** (सहीह बुख़ारी, हदीस: 5645)

इन्हीं हक़ीक़तों की एक झलक मेरी ज़िंदगी में भी दिखाई दी। निकाह के बाद घरेलू हालात ऐसे बने कि ज़िंदगी एक लगातार सख्त इम्तिहान बन गई।

घरेलू हालात धीरे-धीरे ऐसे मोड़ पर पहुँच गए कि वालिदैन भी मुझसे अलग हो गए और अहलिया भी मुझ से दूर हो गई। देखते ही देखते मैं ज़ाहिरी तौर पर बिल्कुल तन्हा रह गया। उस वक़्त ऐसा महसूस होता था कि दुनिया में कोई मेरा दर्द समझने वाला नहीं है। ग़म, फ़िक्र और बेबसी की रातें मेरी ज़िंदगी का हिस्सा बन गई थीं।

मगर यही वह दौर था जब अल्लाह त'आला ने रंज़ को रहमत और तन्हाई को अपनी क़ुर्बत का ज़रिया बना दिया। दिल का सहारा मख़्लूक़ से उठकर औलिया-ए-किराम की बारगाहों की तरफ़ मुंतक़िल होने लगा। अक्सर मज़ारात-ए-औलिया की हाज़िरी देता, वहीं बैठकर अपने दिल का बोझ हल्का करता और रूहानी सुकून हासिल करता। इसी रूहानी निस्बत और औलिया-ए-किराम के फ़ैज़ से दिल में तलब-ए-मौला, ज़ौक़-ए-तौबा, शौक़-ए-इल्म और मुहब्बत-ए-दीन पैदा होती चली गई।

दुनिया की रंगीनियाँ फीकी पड़ती गईं और इल्म-ए-दीन हासिल करने की ऐसी तड़प पैदा हुई कि किताबें मेरी सबसे क़रीबी दोस्त बन गईं। मुतालआ मशग़ला और इल्म की तलाश ज़िंदगी का मक़सद बन गया।। ख़ुसूसन "**तज़्कीरतुल औलिया**" और "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" जैसी किताबों ने दिल की दुनिया बदल दी। इन्हीं की बरकत से दुनिया की नापायदारी का एहसास गहरा हुआ, आख़िरत की फ़िक्र पैदा हुई और ज़िंदगी का मक़सद अल्लाह त'आला व उसके रसूल ﷺ की रज़ा को बनाना नसीब हुआ।

अल्लाह त'आला की हिदायत : अल्लाह त'आला ने अपने फ़ज़्ल व करम से जवानी में ही तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और दीन की सही समझ, तक़वा, परहेज़गारी और हक़ का मुतलाशी बनाया। जो कुछ हासिल हुआ, वह सब उसी की रहमत और हिदायत का नतीजा है।

रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ियारत (ख़्वाब) : अल्लाह त'आला के करम से एक मर्तबा ख़्वाब में हुज़ूर सैय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की ज़ियारत का

शरफ़ हासिल हुआ। इन मुबारक मंज़रों ने दिल में इश्क़-ए-रसूल ﷺ, सुन्नत की पैरवी और दीन पर इस्तिक़ामत का जज़्बा और मज़बूत किया।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की नसीहत (ख़्वाब) : दौराने Lockdown अल्लाह त'आला के हुक़्म से ख़्वाब में सरकार ग़रीब नवाज़ हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह की नसीहत और रहनुमाई हासिल हुई, जिसने दुनियादारी को तर्क करने पर मजबूर कर दिया और दीनदारी पर, सुन्नत अपनाने, दीन की ख़िदमत और अल्लाह त'आला की रज़ा को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाने की जज़्बा हासिल हुई।

पीर-ओ-मुर्शिद की बुलाहट (ख़्वाब) : एक बार ख़्वाब में पीर-ओ-मुर्शिद हुज़ूर ताजुश्शरिया अलैहिर्रहमा की जानिब से बुलाहट, मेहमान-नवाज़ी और मेरे बातिनी मर्ज का इलाज का तजरिबा हुआ। इन रूहानी कैफ़ियात ने सिलसिला-ए-औलिया से मुहब्बत और अदब में इज़ाफ़ा किया और इस्लाह-ए-नफ़्स की तरफ़ तवज्जोह बढ़ाई।

साहिब-ए-मज़ार से रूहानी बातें : अल्लाह त'आला के फ़ज़्ल से कुछ ऐसे रूहानी तजरिबात भी हुए जिन्हें फ़क़ीर अपनी ज़िन्दगी की अहम कैफ़ियत समझता है। इनसे दिल को इत्मीनान, दीन पर मज़बूती और अल्लाह त'आला की याद में बढ़ोतरी नसीब हुई।

फ़ैज़ान-ए-औलिया : औलिया-ए-किराम की मुहब्बत, उनकी तालीमात और रूहानी फ़ैज़ से दिल को दीन पर क़ायम रहने, सुन्नत की पैरवी करने और लोगों तक सही इस्लामी पैग़ाम पहुँचाने का जज़्बा मिलता रहा। फ़क़ीर इसे अल्लाह त'आला की रहमत और औलिया की तवज्जोह का सदक़ा समझता है।

तसव्वुफ़ का शौक : तसव्वुफ़, तज़किया-ए-नफ़्स, इस्लाह-ए-बातिन और औलिया-ए-किराम की सीरत व तालीमात के मुतालआ का ख़ास असर से जाहिरी इल्म और जाहिरी अमल से दिल मुतमयीन नहीं हुआ आखिरकार मैं इल्मे बातीन और इस्लाहे बतीन की तरफ मुतवज्जो हुआ।

मोबाइल : 9534124663
ईमेल : anwarkhan21raza@gmail.com
वेबसाइट : www.ghausokhwajaorazatrust.com

किताब लिखने की वजह

अल्लाह त'आला की अता से यह किताब **"अपनी चाहत बदलो"** लिखने का मक़सद सिर्फ इल्मी बहस करना नहीं, बल्कि हर मुसलमान को उसके दिल की असली बीमारी से आगाह करना है। मेरा यक़ीन है कि इंसान की ज़िन्दगी में आने वाले ज़्यादातर मसाइल की जड़ उसकी चाहत होती है। जब चाहत गलत हो जाती है तो सोच गलत हो जाती है, सोच गलत होती है तो अमल बिगड़ जाते हैं, और जब अमल बिगड़ जाते हैं तो दुनिया और आख़िरत दोनों के हालात बिगड़ जाते हैं।

आज का इंसान सुकून चाहता है, लेकिन उसे सुकून नहीं मिलता। वह दौलत चाहता है, लेकिन तसल्ली नहीं मिलती। वह शोहरत चाहता है, मगर इज़्ज़त नहीं मिलती। वह दुनिया की हर नेमत हासिल कर लेना चाहता है, लेकिन दिल की बेचैनी खत्म नहीं होती। इसका कारण यह नहीं कि उसके पास नेमतें कम हैं, बल्कि यह है कि उसकी चाहत का रुख़ अल्लाह त'आला की रज़ा से हटकर दुनिया की तरफ़ हो गया है।

आज मुसलमानों की एक बड़ी तादाद भी उसी दौड़ में शामिल हो चुकी है, जिसमें हलाल-हराम, जायज़-नाजायज़ और आख़िरत की फ़िक्र पीछे छूटती जा रही है। लोगों की सबसे बड़ी चिंता यह है कि दुनिया में उनका मुक़ाम क्या है, जबकि उन्हें यह फ़िक्र कम है कि अल्लाह त'आला की बारगाह में उनका मुक़ाम क्या होगा। यही ग़फ़लत इस किताब को लिखने का सबसे बड़ा कारण बनी।

क़ुरआन करीम बार-बार इंसान को दुनिया की फ़ानी ज़िन्दगी से धोखा न खाने और आख़िरत की तैयारी करने की तालीम देता है। रसूलुल्लाह ﷺ ने भी दिलों की इस्लाह, नीयत की पाकीज़गी और अल्लाह त'आला की रज़ा को हर अमल की बुनियाद बनाने की तालीम दी। औलिया-ए-किराम ने भी अपनी पूरी ज़िन्दगी लोगों के दिलों को दुनिया की मोहब्बत से निकालकर अल्लाह त'आला की मोहब्बत से जोड़ने में गुज़ार दी।

दुआ है कि अल्लाह त'आला इस मामूली कोशिश को अपनी बारगाह में क़ुबूल फ़रमाए, इसे हमारे लिए सदक़ा-ए-जारीया बनाए और हर पढ़ने वाले के दिल को अपनी रज़ा और अपनी मोहब्बत से भर दे। आमीन।

अज़ : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी
बानी : ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

पेशे लफ़्ज़

इंसान की ज़िन्दगी का असल मक़सद

अल्लाह त'आला ने इंसान को इस दुनिया में बे-मक़सद पैदा नहीं किया। उसकी ज़िन्दगी का एक अज़ीम मक़सद है, और वही मक़सद उसकी कामयाबी या नाकामी का फ़ैसला करता है। अफ़सोस! आज बहुत से लोग अपनी ज़िन्दगी का असल मक़सद भूल बैठे हैं। कोई दौलत कमाने को ज़िन्दगी समझता है, कोई शोहरत पाने को, कोई ऊँचा ओहदा हासिल करने को, तो कोई दुनिया की रंगीनियों में खोकर यही समझता है कि यही असली कामयाबी है। लेकिन जब मौत सामने आती है, तब एहसास होता है कि सारी दुनिया यहीं रह गई और इंसान अपने साथ सिर्फ़ अपने ईमान और आमाल लेकर चला गया।

क़ुरआन मजीद इंसान की पैदाइश का असल मक़सद बयान करते हुए फ़रमाता है:**"मैंने जिन्नों और इंसानों को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।"** (सूरह अज़-ज़ारियात, 51:56)

इस आयत से साफ़ मालूम होता है कि इंसान का असल मक़सद सिर्फ़ खाना, कमाना, सोना, औलाद पैदा करना या दुनिया बनाना नहीं है, बल्कि अल्लाह त'आला की पहचान (मआरिफ़त), उसकी बंदगी (इबादत), उसकी इताअत और उसकी रज़ा हासिल करना है।

इसी तरह अल्लाह त'आला फ़रमाता है: **"वही जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुममें कौन सबसे अच्छे अमल करता है।"** (सूरह अल-मुल्क, 67:2)

यानी यह दुनिया आरामगाह नहीं, बल्कि इम्तिहानगाह है। यहाँ हर इंसान का इम्तिहान उसकी चाहत, नीयत, ईमान और अमल से लिया जा रहा है। जिस इंसान की चाहत अल्लाह त'आला की रज़ा होगी, उसके अमल भी उसी के मुताबिक़ होंगे; और जिसकी चाहत सिर्फ़ दुनिया होगी, वह दुनिया के पीछे भागते-भागते अपनी आख़िरत को बर्बाद कर देगा।

आज का मुआशरा

आह! इस्लाम तेरे चाहने वाले ना रहे ।
जिन का तू चाँद था अफसोस वो हाले ना रहे ।।

आज हमारी मस्जिदें वीरान, ख़ानक़ाहें उदास और दर्सगाहें बेनूर होती जा रही हैं। मर्दों में ग़फ़लत बढ़ती जा रही है, औरतों में बेपर्दगी आम होती जा रही है और हमारी नई नस्ल के ज़ेहन पर ग़ैरों के तौर-तरीक़े हावी होते जा रहे हैं।

हमारी चाहत सिर्फ दुनिया की मुहब्बत है और मज़ा हासिल करने के लिए बाकी रह गई है आखिरत की फ़िक्र और अल्लाह की रज़ा की चाहत सायद ही किसी किसी के दिल मे होगा।

हमारे बच्चे कुफ़्फ़ार की तहज़ीब, दुनियादार नेताओं, फ़िल्मी अदाकारों और दुनिया की चकाचौंध को अपना मक़सद समझने लगे हैं। उन्हें फ़िल्मी और सोशल मीडिया सितारों की ज़िंदगी का पता है, दुनियावी मशहूर लोगों के नाम मालूम हैं, लेकिन अफ़सोस! उम्मत के बहुत से अफ़राद अपने औलिया-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन की ज़िंदगी, उनकी सीरत और उनकी तालीम से अच्छी तरह वाक़िफ़ नहीं।

ज़रा ईमान से बताइए—क्या हमारी हालत पहले जैसी है?

मौजूदा दौर के मुसलमान

बदतरीन कौम:- बेशक आज हम नाम के मुसलमान है नाम तो हमारा मुसलमान है मगर काम हमारे शैतानी और नफ़सानी है, जो हमारा दिल खुद गवाही देगा कि आज हम नाम के मुसलमान है या नहीं। क्योंकि

हकीक़त छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से!
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज़ के फूलों से!!

गौर करो कि आज हम अल्लाह के हुक़ूक और बंदो के हुक़ूक़ अदा न करके गुनाहों के समंदर में डूबे हुए है या नहीं, झूटों के दामन में पल रहे है या

नहीं, दुश्मनी की आग में जल रहे है या नहीं, ग़फलत के शबिस्तां पर सो रहे है या नहीं, गुमराह रास्तों पर चल रहे है या नहीं, नफरत की मौजों में उलझ रहे है या नहीं, तंगनज़री की अंधेरियों में सफर कर रहे है या नहीं, सुदखोरी के माहौल में जी रहे हैं या नहीं, मगरूरियत की फ़िज़ा में परवाज़ कर रहे है या नहीं, शराब नोशी व शराब फरोशी की दुनिया में जिंदगी गुज़ार रहे है या नहीं, कितनी हकीकतें गिनवाउं, गिनवाउं तो क्या गिनवाउं, बुराइयां गिनवाउं तो कितनी गिनवाउं, बुराई एक हो तो इसका जिक्र करूं, एक जंजीर हो तो इसकी कड़ियां गिनवाउं, आज तो हर जलील काम का सरदार मुसलमान है, हर पस्त हरकत आज हमारा शेवा बन चुकि है, क्या नहीं है हम में? बेहयाई व बेईमानी, क्या नहीं है हम में, बेदीनी व सूदखोरी क्या नहीं है हम में, तंग नज़री व फरेबकारी, क्या नही है हम में, शराब नोशी, क्या नहीं है हम में? सट्टा पट्टा व मटका बाज़ारी इसीलिए तो लार्ड बर्नाड शाह ने अपनी किताब इस्लाम और मुस्लिम में लिखा है, “दुनिया का सब से अच्छा मज़हब इस्लाम है और दुनिया की सब से बदतर कौम मुसलमान है“ इसीलिए डॉ. इक्बाल कहते है

यूं तो सय्यद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफगान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ मुसलमान भी हो !

आज हम हक़ीक़ी मुसलमान नहीं रहे

बातिल की मिलावट हमारे जाहिर और बातिन में ग़र्क कर चुकी है इस वजह से हम मुनाफिक़ो में शुमार है चाहे मुनाफिके अमली हो या मुनाफिके एतेक़ादी। मुनाफ़िक़ का माना है हक़ व बातिल में मिलावट करने वाला। ईमान में बातिल कि मिलावट कुफ्र है और अमल में बातिल का मिलावट फिस्को फूजुर है। बातिल यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात, शैतानी खसलते, दुनिया की मुहब्बत, कुफ़्फ़ार से मुशाबिहत, मुनाफिक़ो की सोहबत हमे हक़ीक़ी मुसलमान के लायक नहीं रहने दिया। जैसा की हदीस यानी फ़रमाने मुस्तफ़ा है (तर्जुमा) मेरी उम्मत के अक्सर मुनाफिक़ कारी हैं (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 77)

अपनी चाहत क्यों बदले?

मौजूदा दौर फ़ित्नों, ग़फ़लत और दुनियादारी का दौर है। इस दौर में मुसलमानों की सबसे बड़ी चाहत दुनिया हासिल करना बन गई है। जबकि हक़ीक़त ये है कि ये दुनिया काफ़िरों के लिए जन्नत है यानी इसे काफ़ीर लोग हासिल करे।

हदीस में है: **"दुनिया मोमिन के लिए क़ैदखाना और काफ़िर के लिए जन्नत है"** [मुस्लिम]

लेकिन अफ़सोस... आज मुसलमान ही इस "क़ैदखाने" मे मुसलमान खुद को आजाद समझकर काफ़िरों वाली जन्नत यानी दुनिया हासिल करने मे लगा हुआ है और अपनी असली जन्नत की चाहत से बेख़बर हो गया है। लिहाज़ा आज ज़रूरत है कि दुनियावी चाहत को बदलकर अल्लाह त'आला की रज़ा की चाहत और आख़िरत की चाहत में कोशिश और मशगूल रहा जाए।

अगर किसी इंसान के दिल में दुनिया की चाहत भर जाए तो उसका हर काम दुनिया के लिए होता है। वह सुबह उठता है तो दुनिया के लिए, दिन भर मेहनत करता है तो दुनिया के लिए, और रात को सोता है तो भी दुनिया की फिक्र के साथ सोता है यही गफ़लत है और सबसे बड़ा गुनाह।

हदीस मे है **दुनिया की चाहत और मुहब्बत तमाम गुनाहों का जड़ है** इसी जड़ को उखाड़ फेंकने के लिए हमें अपनी चाहत बदलने की जरूरत है ताकि ज़िंदगी की असल मक़सद को हासिल किया जा सके यानी नेक बनकर नेकियाँ कर के अल्लाह त'आला की रज़ा का हुसूल।

कुरआन करीम में अल्लाह त'आला फरमाता है:

“जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद, मगर वह दिल काम आएगा जो अल्लाह त'आला के पास सलामत लेकर आए।”
(सूरह अश-शुअरा, आयत नं 88-89)

चाहत बदलने से हालात बदलेंगे

इंसान की ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मोड़ उसके हालात नहीं, बल्कि उसकी चाहत होती है। हालात बाहर से बदलते हैं, लेकिन चाहत दिल के अंदर बदलती है। जब दिल की चाहत बदल जाती है, तो इंसान की सोच, नियत, किरदार और आमाल भी बदलने लगते हैं। यही बदलाव आगे चलकर उसके हालात को भी बदल देता है।

आज बहुत-से लोग अपने हालात बदलने के लिए दौलत, नौकरी, कारोबार, रिश्ते या जगह बदलने की कोशिश करते हैं, लेकिन अपने दिल की चाहत नहीं बदलते। इसलिए थोड़े समय के लिए हालात बदल भी जाएँ, तो भी दिल का सुकून हासिल नहीं होता। असली बदलाव तब शुरू होता है, जब इंसान अपनी सबसे बड़ी चाहत को दुनिया से हटाकर अल्लाह त'आला की रज़ा और आख़िरत की कामयाबी बना लेता है।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

"बेशक अल्लाह त'आला किसी क़ौम से अपनी नेअमत (मामलात) नहीं बदलता जब तक वह ख़ुद अपनी हालत न बदल दें।"(सूरह अर-रअद, 13:11)

इस आयत से मालूम होता है कि बाहरी हालात बदलने से पहले अंदर का इंसान बदलना ज़रूरी है। और अंदर का सबसे बड़ा बदलाव चाहत का बदलाव है। जब चाहत बदलती है, तो नियत बदलती है; नियत बदलती है, तो अमल बदलते हैं; और अमल बदलते हैं, तो अल्लाह त'आला इंसान के हालात में भी बरकत और भलाई पैदा फ़रमा देता है।

आज मुसलमानों की सबसे बड़ी ज़रूरत यही है कि वे अपनी चाहतों का मुहासबा करें। यदि हमारी सबसे बड़ी चाहत दुनिया, माल, शोहरत और नफ़्स की ख़्वाहिशें हैं, तो हमें उन्हें बदलकर अल्लाह त'आला की रज़ा, रसूलुल्लाह ﷺ की इताअत और आख़िरत की कामयाबी को अपनी सबसे बड़ी चाहत बनाना होगा। यही वह रास्ता है जो इंसान को ग़फ़लत से हिदायत, गुनाह से तौबा और बेचैनी से सुकून की ओर ले जाता है।

याद रखिए:

चाहत बदलो, नियत बदल जाएगी।
नियत बदलो, अमल बदल जाएगा।
अमल बदलो, ज़िन्दगी बदल जाएगी।
और जब ज़िन्दगी अल्लाह त'आला के लिए बदल जाएगी,

तो अल्लाह त'आला तुम्हारे हालात भी बदल देगा।

ख़ुदा ने आजतक उस क़ौम की हालत नहीं बदली!
न हो चाहत जिसको ख़ुद अपनी हालत बदलने का!!

आज भी तुम्हारे दिल में वही जज़्बा, जोश व खरोश पैदा हो सकता है जो पहले के मुसलमानों में था | वही शुजाअत आ सकती है जो दौरे माज़ी में थी, मगर शर्त सिर्फ यही है कि अल्लाह त'आला की रस्सी को मज़बूत पकड़ लो उसकी अज़ीमुश्शान बारगाह में झुक जाओ, अपने दिल को खौफे ख़ुदा से धो लो, ईमान की रौशनी से अपने ज़मीर को मुनव्वर कर लो, फिर देखो करिशम-ए-कुदरत तुम्हारे जेरे कदम सारी कायनात आती है या नहीं!

और हां शैतान की इताअत को ठुकरा दो अल्लाह त'आला की इताअत के सामने सजदा रेज़ हो जाओ, अपनी बदआमालियों से तौबा कर लो मस्जिदों की ज़ीनत बन जाओ जाहिद और मुजाहिद बन जाओ, शहीद और ग़ाज़ी बन जाओ, तुम तो अल्लाह त'आला व रसूलल्लाह के गुलाम हो अल्लाह त'आला के बंदे हो तो फिर शैतान के गुलाम क्यों बने हो और अल्लाह त'आला ही ने तुम्हें उस कायनात का बादशाह बना कर भेजा है तुम तो इस्लाम के मुजाहिद हो अल्लाह त'आला के सिपाही हो अब भी वक्त है कि अपनी गलती पर नादिम हो जाओ और ज़ार व कतार रो-रो कर नदामत के आंसू बहाओ क्योंकि नदामत के आंसू अल्लाह त'आला के कहर व ग़ज़ब को बुझा देती हैं।

बाब 1

चाहत की हक़ीक़त

चाहत इंसान के दिल की वह गहरी इच्छा, रुझान और तलब है, जो उसे किसी चीज़ को पाने, अपनाने या उसके लिए मेहनत करने पर उभारती है। यही चाहत इंसान की सोच, नियत, फ़ैसलों और आमाल का रुख़ तय करती है। जिस चीज़ की चाहत दिल में सबसे ज़्यादा होती है, इंसान उसी को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बना लेता है।

दिल का किसी चीज़ को पाने की तरफ़ खिंचाव और उसके लिए कोशिश करना चाहत कहलाता है।

चाहत का तअल्लुक़ दिल से होता है, न कि ज़बान और जिस्म से; मगर चाहत की अलामत ज़बान और जिस्म—दोनों में ज़ाहिर हो जाती है।

मसलन, अगर कोई शख़्स दुनिया की चाहत रखता हो तो उसकी ज़बान और जिस्म में उसी दुनिया को पाने का जज़्बा दिखाई देता है। यानी उसकी ज़बान और जिस्म की तमाम हरकतें दुनिया को हासिल करने के लिए होती हैं। इसी तरह आख़िरत की चाहत का भी मामला है।

इंसान की चाहत दो तरह की होती है:

1. **दुनियावी चाहत**

2. **आख़िरत की चाहत और अल्लाह त'आला की रज़ा की चाहत**

कहा गया है:

“इंसान की ज़िंदगी उसी तरफ़ चलती है जिस चीज़ की उसके दिल में चाहत होती है।”

अगर दिल में दुनिया की चाहत ज़्यादा हो तो इंसान उसी में लग जाता है,

और अगर अल्लाह त'आला की रज़ा और आख़िरत की चाहत हो तो ज़िंदगी का रास्ता बदल जाता है।

रिसाला क़ुशैरिया में है:

“चाहत हर काम की इब्तिदा है, क्योंकि हर काम में चाहत ही मुक़द्दम होती है। बंदा जिस चीज़ की चाहत नहीं करता, उसे अमल में नहीं लाता।”

(रिसाला क़ुशैरिया, बाब: इरादत का बयान, पेज 368)

इंसानी फ़ितरत और चाहत

अल्लाह त'आला ने इंसान को ऐसी फ़ितरत पर पैदा किया है कि उसके दिल में किसी न किसी चीज़ की चाहत अवश्य होती है। इंसान बिना चाहत के नहीं जी सकता। वह हमेशा किसी मक़सद, मोहब्बत या मंज़िल की तलाश में रहता है। इसलिए सवाल यह नहीं कि इंसान के दिल में चाहत है या नहीं, बल्कि सवाल यह है कि उसकी चाहत किसके लिए है? हक़ के लिए या बातिल के लिए।

इंसानों को चाहने/चुनने का इख़्तियार है

अल्लाह त'आला का फ़रमान है: **जो आख़िरत की खेती (नेयमत) चाहे हम उसके लिये उसकी खेती (नेयमत) बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें (दुनिया) से कुछ (फानी सामान) देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नही ।** (सूरह - शूरा, आयत नं. 20)

चाहत और चुनाव

क़ुरआन में है: **कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह त'आला को माने उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं।** (सूरह बक़रह, आयत न. 256)

अल्लाह त'आला का रास्ता और शैतान के रास्ते

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने एक लकीर खीची और फ़रमाया

यह अल्लाह त'आला का रास्ता है, फिर आपने उस लकीर के दायें बायें कुछ और लकीरें खींची और फ़रमाया यह शैतान के रास्ते हैं जिन के लिए वह लोगों को बुलाता रहता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16, पेज 107)

अल्लाह त'आला का फ़रमान है: (तर्जुमा) **बेशक हमने उसे राह बताई की हक़ मानता या नाशुक्री करता।**(सुरह इंसान, आयत नं. 3)

दोनों थे इख़्तियार में दुनिया भी दीन भी
देखो तो तलबगारों ने क्या इख़्तियार किया

चाहत का इंसानी ज़िन्दगी पर असर

अल्लाह त'आला ने इंसान को सिर्फ जिस्म ही नहीं दिया, बल्कि उसे एक दिल भी अता फ़रमाया है। यही दिल इंसान के ईमान, अख़्लाक़, किरदार, नियत और आमाल का मरकज़ है। जिस चीज़ की चाहत इस दिल में सबसे ज़्यादा होती है, इंसान की पूरी ज़िन्दगी उसी के इर्द-गिर्द घूमने लगती है। इसलिए इस्लाम में दिल की इस्लाह और चाहतों की पाकीज़गी को बहुत अहमियत दी गई है।

हदीस मे है तर्जुमा : **"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है, अगर वह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म (यानी तमाम अंग) दुरुस्त होता है और अगर वोह खराब हो तो सारा जिस्म खराब होता है, सुन लो कि वोह दिल है ।**(बुखारी शरीफ़, जिल्द 1)

चाहत इंसान की ज़िन्दगी का रुख़ तय करती है। इंसान जिस चीज़ को अपना मक़सद बना लेता है, उसी के लिए मेहनत करता है, उसी के बारे में गौर व फिक्र करता है और उसी को पाने के लिए अपनी ताक़त, वक्त और दौलत खर्च करता है। अगर उसकी सबसे बड़ी चाहत अल्लाह त'आला की रज़ा हो, तो उसके आमाल नेक हो जाते हैं; और अगर उसकी सबसे बड़ी चाहत दुनिया हो, तो उसका दिल दुनिया का ग़ुलाम बन जाता है।

मिसाल हक़ीक़ते चाहत

ऐ नादान इंसान!

अच्छी तरह समझ लो कि तुम्हारी चाहत ही तुम्हें अच्छा या बुरा बनाती है, और वही तुम्हें अच्छे इनआम या बुरे अंजाम का हक़दार बनाती है।

याद रखो कि हक़ और बातिल दो अलग रास्ते हैं।

जैसे की क़ुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है :

तर्जुमा : **कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह त'आला को माने उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं।** (सूरह बक़रह, आयत न. 256)

✓ तुम्हारा जिस्म एक सवारी (गाड़ी) की तरह है,

✓ तुम्हारे आमाल उस गाड़ी के मुसाफ़िर (पैसेंजर) हैं,

✓ और तुम्हारी चाहत उस गाड़ी का हेंडल (स्टेयरिंग) है।

अब सोचो!

गाड़ी उसी दिशा में जाती है जिधर स्टेयरिंग मोड़ा जाता है।

इसी तरह तुम्हारा जिस्म और तुम्हारे आमाल भी उसी तरफ़ चल पड़ते हैं, जिधर तुम्हारी चाहत उन्हें मोड़ देती है।

अगर तुम्हारे दिल में दुनियावी चाहत पैदा हो जाए

तो पहले इंसान का दिल बुरा बनता है,

फिर उससे बुरे काम निकलते हैं,

और आख़िर में वही इंसान बुरे अंजाम का हक़दार बन जाता है।

लेकिन अगर दिल में दीनी और पाक चाहत हो तो इंसान पहले खुद अच्छा बनता है,

फिर उससे अच्छे काम जाहिर होते हैं,

और आख़िर में वह अल्लाह त'आला की रहमत और बेहतरीन इनआम का हक़दार बन जाता है।

इसलिए अपने दिल की चाहत को बदलो, क्योंकि जब चाहत बदलती है तो ज़िंदगी का रास्ता बदल जाता है, जब रास्ता बदलता है तो अंजाम भी बदल बदल जाता

जैसी चाहत वैसी ने'यमत

क़ुरआन में है: (तर्जुमा) **''जो दुनिया का इनाम चाहे हम उसमें से उसे दें और जो आख़िरत का इनाम चाहे, हम उसमें से उसे दें और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अता करें ''**(सुरह इमरान, आयत नं. 145)

खास ने'अमते अवामुन्नास को नहीं मिलती

हदीस: हमारे आक़ा नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया ऐ उमर हिदायते रहनुमाई तालिब (चाहने वालों) की इस्तेदाद (क़ाबिलियत) और जिंस (दर्जा) के मुताबिक हुआ करती है। असरारे इलाही (अल्लाह त'आला की राज़) की ने'अमते उज़मा (बड़ी ने'अमत) ना अहल (ना क़ाबिल) अवामुन्नास को नहीं दी जाती क्यूंकि उनको ऐसी ने'अमत दे देना इस नेअमत कि ना क़द्री है। (असरारे हक़ीक़ी, हज्ज की हक़ीक़त, पेज 17)

जैसी करनी वैसी भरनी

हदीस: सरकारे दो आलम ﷺ का फरमाने आलीशान है कि "नेकी पुरानी नही होती और गुनाह भुलाया नही जाता, बदला देने वाला यानी अल्लाह त'आला कभी फ़ना नही होगा, लिहाजा जो चाहे कर, तू जैसा करेगा वैसा भरेगा।"(बहरूद्दमुअ, पेज 38)

बन्दो के चाहत के मुताबिक अल्लाह त'आला की अता

हदीस: नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि आख़िरत हासिल करने की चाहत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह त'आला दुनिया भी बिन मांगे देता है लेकिन दुनिया (फानी चीजें जैसे माल व दौलत) हासिल करने की

नियत पर अमल करने वाले को आख़िरत नहीं मिलेगी। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

चाहत ही मंजिल तक पहुँचाता है

अल्लाह त'आला का फ़रमान है: (तर्जुमा) **जो आखिरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।** (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 19)

ईमान व हिदायत अल्लाह की अता से

अल्लाह त'आला का फ़रमान है: **किसी जान की क़ुदरत (इख़्तियार) नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह त'आला के हुक्म से (जब तक अल्लाह त'आला हुक़्म न दे)।** (सूरह यूनुस, आयत न. 100)

हर काम अल्लाह त'आला के हुक़्म से

ये जान ले कि हर काम अल्लाह त'आला के हुक़्म से ही होता है। क़ुरआन में है: "**उसके (अल्लह के) हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं।** (सूरह रूम, आयात 25), क़ुरआन में दूसरी जगह है **"उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उसके (अल्लाह त'आला के) ज़ेरे हुक्म हैं"।**(सूरह रूम, आयात 26) आगर किसी के साथ बुरा हुवा तो वो भी अल्लाह त'आला का हुक़्म से हुवा क्योंकि बुरा इसलिये हुवा की वो उसी लायक था, अगर किसी के साथ अच्छा हुआ तो वो भी अल्लाह त'आला के हुक़्म से हुवा क्योंकि वो उसी लायक था। अल्लाह त'आला का फ़रमान है: **"जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह त'आला बेपर्वाह है।'** (सुरह लुकमान, आयत न. 12)

बंदों के चाहत के मुताबिक अल्लाह का हुक़्म मे बदलाव

अगर बन्दा नेक अमल की चाहत रखता है तो अल्लाह त'आला उसे नेक काम करने का हुक़्म देता है और अगर बन्दा नाफरमानी यानी गुनाह का

चाहत रखता है तो अल्लाह त'आला हुक़्म दे देता है यानी इंसानो को चाहने का इख़्तियार है लेकिन अच्छा इनआम और बुरे अंजाम से लोगों को आगाह किया गया है कि बुरा चाहत रखोगे तो बुरा अंजाम यानी दुनिया मे परेशानी, ज़िल्लत, मुसीबत, अज़ाब और आख़िरत में जहन्नम का हक़दार होना होगा इसी तरह नेक काम का अच्छा ईनआम है।

यानी पहले बंदों की चाहत फिर अल्लाह त'आला का हुक़्म फिर बंदे का काम फिर अंजाम इसलिए खूब जान लो अल्लाह त'आला अपने बंदों पर जरा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता, बन्दा खुद बुरी चाहत रखकर बुरा काम करके बुरा अंजाम का हक़दार होता है।

अंजाम और इनाम चाहत के बिना पर

इंसान का अंजाम और इनाम सिर्फ उसके ज़ाहिरी आमाल पर निर्भर नहीं होता, बल्कि उन आमाल के पीछे मौजूद चाहत पर निर्भर करता है। जिस के दिल में अल्लाह त'आला की रज़ा, आख़िरत की कामयाबी और दीन की ख़िदमत की चाहत होगी, उसके आमाल अल्लाह त'आला के यहाँ क़ुबूलियत के ज़्यादा क़रीब होंगे और अच्छे ईनाम का हक़दार होंगे।

बुराई ख़ुद की चाहत की वजह से

अल्लाह त'आला का फ़रमान है तर्जमा: **"ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह त'आला की तरफ से है और जो बुराई पहुंचे वो तेरी अपनी तरफ से है।"** (कंज़ुल ईमान , सूरह निसा, आयात न - 79)

मुसीबत (सजा) खुद के चाहत की वजह से

अल्लाह त'आला का फ़रमान है (तर्जुमा): **"जो मुसीबत पहुंची वह इसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (यानी खुद से गुनाह किया)।"** (सूरह शूरा, आयत न. 30)

खुद का गुनाह खुद के लिए खतरा

अल्लाह त'आला फ़रमाता है (तर्जुमा): **"ऐ लोगो तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारे ही जानों का वबाल हैं दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतुक थे"** (सूरह यूनुस, आयत न. 23)

खुद का भला व बुरा खुद के चाहत की वजह से

अल्लाह त'आला का फ़रमान है (तर्जुमा): **अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे और बुरा करोगे तो अपना** (सूरह बनी इसराएल, आयत 7)

अपना भलाई और बुराई अपने उपर है

अल्लाह त'आला फ़रमाता है (तर्जुमा): **जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी और हम अज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें।** (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 15)

अपने आप पर ज़ुल्म करना

क़ुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है (तर्जमा कंजुल ईमान): **"बेशक अल्लाह त'आला लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता हाँ लोग ही अपनी आप पर ज़ुल्म करते हैं।** (सूरह यूनुस, आयत 44)

दिल किसका गुलाम बनता है?

इंसान का दिल उसी का गुलाम बन जाता है, जिससे वह सबसे ज़्यादा मोहब्बत करता है। अगर दिल में अल्लाह त'आला और उसके रसूल ﷺ की मोहब्बत होगी, तो इंसान की ज़िन्दगी इबादत, तक़वा और नेकियों की तरफ़ बढ़ेगी। लेकिन दिल दुनिया, दौलत, शोहरत, नफ़्स या गुनाहों का आशिक़ बन जाए, तो वही चीज़ उसकी सोच, फ़ैसलों और किरदार पर हावी हो जाती है। इसलिए औलिया-ए-किराम फ़रमाते हैं, "दिल का बादशाह वही है, जिसकी मोहब्बत दिल में सबसे ज्यादा हो।" इसलिए हर मुसलमान को अपने दिल को

दुनिया की ग़ुलामी से निकालकर अल्लाह त'आला की मोहब्बत का चाहत होना चाहिए क्योंकि जिसका दिल अल्लाह त'आला का हो गया, वही दुनिया और आख़िरत में कामयाब है।

चाहत (तलब) ही अव्वल है

जिसे जिस चीज़ की चाहत होती है, इंसान उसी से मुहब्बत करता है और जिस से मुहब्बत करता है, उसकी इताअत और उसे हासिल करने के लिए अपनी नीयत, मेहनत, सेहत, वक्त और दौलत तक खर्च कर देता है।

इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपनी चाहत को बदल ले।

अपनी चाहत को दुनिया से हटाकर सिर्फ़ अल्लाह त'आला की रज़ा की तरफ़ कर लो।

कोशिश ही चाहत है

अल्लाह त'आला कुरआन में फरमाता है:

तर्जुमा :“ **इंसान के लिए वही है जिसकी उसने कोशिश की।**”(सूरह नज्म: 39)

और एक जगह फ़रमाया:

तर्जुमा : “ **और जो हमारी राह में कोशिश करते हैं, हम उन्हें अपने रास्ते ज़रूर दिखा देते हैं। ”** (सूरह अनकबूत: 69)

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

तर्जुमा : **“जिस चीज़ में तुम्हारे लिए फायदा हो, उसे हासिल करने की कोशिश करो, अल्लाह त'आला से मदद मांगो और हिम्मत मत हारो।**” (मुस्लिम)

तुम बस अल्लाह त'आला पर भरोसा करके उसकी रज़ा के लिए कदम बढ़ाओ। अगर रास्ता मुश्किल भी लगे, तो ये समझ लो कि हर मुश्किल के पीछे अल्लाह त'आला की कोई हिकमत होती है।

अल्लाह त'आला की राह में उठाया गया हर कदम इबादत बन जाता है।

इसलिए अल्लाह त'आला पर तवक्कुल करो, उसकी रज़ा के लिए निकलो, और कोशिश शुरू करो – फिर देखना रास्ते खुद आसान होते चले जाएंगे।

जहाँ चाह है, वहाँ राह है"

ये कहावत इंसान की ज़िंदगी का एक बुनियादी उसूल है। इसका मतलब यह है कि अगर दिल में सच्ची लगन (चाहत), मज़बूत इरादा और मेहनत करने का जज़्बा हो, तो मुश्किल से मुश्किल रास्ते भी आसान हो जाते हैं। कामयाबी सिर्फ हालात पर नहीं, बल्कि इंसान की सोच, हिम्मत और कोशिश पर निर्भर करती है।

सीराते मुस्तक़ीम (सीधा रास्ता) पर चलने के लिए सबसे पहली चीज़ "चाहत" (सच्ची नीयत और तलब) ही है। बिना दिल की चाह के इंसान एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकता।

अब इसे क़ुरआन और हदीस की रौशनी में समझिए:

क़ुरआन में है

"**अल्लाह त'आला जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।**"

(सूरह अल-बक़रह 2:213 का मफ़हूम)

यहाँ "जिसे चाहता है" का मतलब यह भी है कि बंदा खुद हिदायत की तलब रखे यानी पहले अपना 1 क़दम अल्लाह त'आला की तरफ बढ़ाए फिर अल्लाह त'आला 10 क़दम (क़ुदरत वाली) उस बन्दे की तरफ बढ़ाएगा लेकिन शुरू बन्दा को ही करना होगा। अगर दिल में चाहत ही न हो, तो हिदायत कैसे मिले यानी अल्लाह त'आला उसके लिए कैसे चाहे ?

दूसरी जगह कुरान में है

“ **और जो लोग हमारी राह में कोशिश करते हैं, हम उन्हें अपनी राह ज़रूर दिखाते हैं।”** (सूरह अल-अनकबूत 29:69)

यानी पहले “चाहत + कोशिश”, फिर “हिदायत”।

हर नमाज़ में हम सुरह फतेहा में पढ़ते हैं:

(इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम)**“हमें सीधा रास्ता दिखा”**

इसका मतलब है कि हिदायत की चाहत रखना है न कि मुंह से रट्टा लगाना है।

चाहत (तलब) ही मुहब्बत है

जिसे जिस चीज़ की चाहत होती है, इंसान उसी से मुहब्बत करता है और जिस से मुहब्बत करता है, उसकी इताअत और उसे हासिल करने के लिए अपनी नीयत, मेहनत, सेहत, वक्त और दौलत तक खर्च कर देता है।

खुलासा (output):

1. **चाहत** - मोहब्बत पैदा करती है
2. **मोहब्बत** - इताअत लाती है
3. **इताअत** - सुन्नत और शरीअत पर अमल कराती है

सुन्नत और शरीअत - इंसान को नेक आमाल की तरफ ले जाती है

इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपनी चाहत को बदल ले।

अपनी चाहत को दुनिया से हटाकर सिर्फ़ अल्लाह त'आला की रज़ा की तरफ़ कर लो।

जैसे बातिल - नफ़्स, शैतान, दुनिया से मोहब्बत यानी बातिल को पाने की चाहत।

और हक़ - अल्लाह त'आला, रसूलुल्लाह ﷺ, औलिया अल्लाह से मोहब्बत यानी हक़ को पाने की चाहत।लेकिन दिल में कोई एक ही समा

सकता है। या तो हक़ या बातिल।एक हदीस में हज़रते अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बर-ए-खुदा ﷺ का इर्शाद-ए-पाक है:

तर्जुमा : **"जिस शख्स ने अपनी इस दुनिया से मुहब्बत की तो उसने अपनी आख़िरत को नुकसान में डाला। और जिसने अपनी आख़िरत से मुहब्बत की उसने अपनी दुनिया को नुकसान पहुंचाया।"** *[अहमद, बैहक़ी]*

चाहत और नियत का रिश्ता

चाहत और नियत का आपस में गहरा तअल्लुक है। चाहत दिल की इच्छा है, जबकि नियत उसी इच्छा के मुताबिक किया गया इरादा है। इंसान जिस चीज़ को दिल से चाहता है, उसकी नियत भी उसी ओर बन जाती है और फिर उसके आमाल उसी का रूप ले लेते हैं।

अगर चाहत अल्लाह त'आला की रज़ा, आख़िरत की कामयाबी और दीन की ख़िदमत की हो, तो नियत भी पाक होगी और अमल भी मक़बूल होंगे। लेकिन अगर चाहत दुनिया, शोहरत या लोगों की वाहवाही हो, तो अच्छी इबादत भी रिया (दिखावा) का शिकार हो सकती है। इसलिए सबसे पहले दिल की चाहत को सही करना ज़रूरी है, क्योंकि पाक चाहत से ही पाक नियत और नेक अमल पैदा होते हैं।

आमाल का दारोमदार नियतों पर

तर्जुमा : हज़रत उमर इब्ने खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत हैउन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"तमाम आमाल का दारोमदार नियतों पर है। और हर इंसान को वही मिलेगा जिसकी उसने नियत की। पस जिस शख्स की हिजरत अल्लाह त'आला और उसके रसूल की तरफ हो, तो उसकी हिजरत अल्लाह त'आला और उसके रसूल के ही लिए है।

और जिस शख्स की हिजरत दुनिया हासिल करने के लिए या किसी औरत से निकाह करने के वास्ते हो, तो उसकी हिजरत उसी के लिए ही होगी जिसकी तरफ उसने हिजरत की।" [सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम]

नियत का दारोमदार चाहत पर

हदीस शरीफ़ में है: **"आमाल का दारोमदार नियतों पर है।"** (सहीह बुख़ारी: 1)

लेकिन अगर हक़ीक़त के आईने में देखा जाए, तो नियत से पहले चाहत पैदा होती है। इंसान पहले किसी चीज़ को दिल से चाहता है, फिर उसी चाहत से उसके अंदर नियत बनती है, और उसके बाद वही नियत अमल की शक्ल में ज़ाहिर होती है। इस तरह चाहत, नियत की बुनियाद है और नियत, अमल की बुनियाद।

दिल की इस्लाह चाहत से

दिल इंसान के जिस्म का सबसे अहम हिस्सा है। उसी से ईमान, इख़्लास, मोहब्बत, तक़वा और नियत पैदा होती है।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"ख़बरदार! जिस्म में एक गोश्त का टुकड़ा है; जब वह सही हो जाता है तो पूरा जिस्म सही हो जाता है, और जब वह बिगड़ जाता है तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है। सुन लो, वह दिल है।"(सहीह बुख़ारी: 52, सहीह मुस्लिम: 1599)

"अल्लाह त'आला इंसान के दिल को देखता है, और दिल ही चाहत, नियत और इख़्लास का मरकज़ है। इसलिए चाहत की इस्लाह, नियत और दिल की इस्लाह की पहली मंज़िल है।"

अल्लाह त'आला इंसान के चाहतों को देखता है

कुरआन मे अल्लाह त'आला का फ़रमान है :

तर्जुमा : **“जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिये उसकी खेती बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं”**। (सूरह अश-शूरा, 20)

दूसरी जगह फ़रमाया :

तर्जुमा : **" जो आख़िरत चाहे और आख़िरत के लिए कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी"**(सूरह बनी इस्राईल, 17:19)

अल्लाह त'आला की चाहत और बंदों की चाहत

हदीस-ए-कुदसी है।

अल्लाह त'आला फरमाता है तर्जुमा : **"एक तेरी (इंसान की) चाहत है, और एक मेरी (रहमान की) चाहत है। होगा वही जो मेरी चाहत है। अगर तूने खुद को मेरी चाहत के हवाले कर दिया, तो मैं तुझे तेरी चाहत भी दे दूँगा। और अगर तूने मेरे हुक्म के खिलाफ किया, तो मैं तुझे तेरी चाहत (की दौड़) में थका दूँगा, लेकिन होगा फिर भी वही जो मेरी चाहत है।"**

मुसलमानों को चाहिए की वो अपनी चाहत बदल कर अल्लाह त'आला की चाहत पर अपने आप को ढाल ले।

बदलाव की शुरुआत कहाँ से होगी?

बदलाव के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं—पहचान, पक्का इरादा और लगातार कोशिश। सबसे पहले इंसान अपनी कमजोरी को पहचाने। जब तक वह अपनी कमी को कमी मानने के लिए तैयार नहीं होगा, इस्लाह का रास्ता शुरू नहीं होगा। इसके बाद एक पक्का और सच्चा फैसला करे कि उसे अपनी इस आदत या कमजोरी को बदलना है। फिर उस फैसले को केवल एक दिन नहीं, बल्कि रोज़ दोहराता रहे।

इस रास्ते में गिरना भी मुमकिन है। कभी नमाज़ छूटेगी, कभी गुस्सा आएगा, कभी मोबाइल में समय बर्बाद होगा, कभी पुरानी आदत वापस खींचेगी। कामयाबी का मतलब कभी न गिरना नहीं, बल्कि गिरने के बाद जल्दी उठना है। गिर कर पड़े रहना ये नाकामी है यानी दुनियादारी मे पड़े रहना ।

बाब 2

दुनिया की चाहत का अंजाम

अल्लाह त'आला ने दुनिया को इंसान के लिए इम्तिहानगाह बनाया है, मंज़िल नहीं। लेकिन जब इंसान दुनिया को ही अपनी सबसे बड़ी चाहत और मक़सद बना लेता है, तो वह धीरे-धीरे अपने रब, दीन और आख़िरत से ग़ाफ़िल होने लगता है। दुनिया की बेहिसाब मोहब्बत दिल को सख़्त कर देती है, इबादत में लज़्ज़त कम हो जाती है और गुनाह आसान लगने लगते हैं। यही दुनिया की चाहत का सबसे बड़ा नुकसान है।

तमाम गुनाहों की जड़

फरमाने नबवी ﷺ है : **"दुनिया की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़/असल है।"** [मुकाशफ़तुल कुलूब, बाब 31]

[यानी लह्व-व-लहब, फिज़ूल मशग़ूलियत, माल की मुहब्बत, नफ़्सानी ख़्वाहिशात और शोहरत] ये दुनिया है और यही गुनाहों का जड़ है।

दुनियावी चाहत की अलामत

कुरआन मे अल्लाह त'आला का फ़रमान है: **“जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो (कुछ भी) नहीं मगर खेल कूद (मौज मस्ती, मनोरंजन) और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना (यानी किसी भी मामले में तकब्बुर करना) और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती (कम्पटीशन) चाहना।** (सूरह हदीद, आयत नं. 20)

दुनियावी चाहत की पाँच अलामतें

1. लह्व व लअब (मौज मस्ती) की चाहत

हर वक़्त हँसी-मज़ाक, मौज-मस्ती, बेकार मनोरंजन, टाइम पास और दिल बहलाने में लगे रहना, जबकि अल्लाह त'आला की याद, क़ुरआन

और आख़िरत की फ़िक्र दिल से निकल जाए। यही ग़फ़लत इंसान को धीरे-धीरे दीन से दूर कर देती है।

2. फ़ुज़ूल मशग़ूलियत (वक़्त की ना क़द्री)

ऐसे कामों, बातों और मशग़लों में वक़्त गुज़ारना जिनका न दुनिया में कोई फ़ायदा हो और न आख़िरत में कोई सवाब। फ़िज़ूल गुफ़्तगू, बेकार बहस, गुनाह वाली महफ़िलें और लापरवाही इंसान के वक़्त और दिल दोनों को बर्बाद कर देती हैं।

3. माल व दौलत की चाहत

हलाल रोज़ी कमाना इबादत है, लेकिन माल की हवस, लालच, हराम कमाई, जमा करने की बेपनाह चाहत और दौलत पर घमंड दुनिया की मोहब्बत की निशानी है। ऐसा इंसान माल का मालिक नहीं, बल्कि माल का ग़ुलाम बन जाता है।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ

तर्जुमा : **"तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा चाहत ने"** (सूरह अल-तकातुर , आयत नं. 1)

4. नफ़्सानी ख़्वाहिशात की चाहत

अपनी हर इच्छा, शौक़, लज़्ज़त और शहवत को पूरा करने की फ़िक्र में अल्लाह त'आला के हुक्म को भूल जाना नफ़्स की ग़ुलामी है। मोमिन अपनी ख़्वाहिशों को शरियत के ताबे रखता है, जबकि ग़ाफ़िल इंसान शरियत को अपनी ख़्वाहिशों के ताबे करना चाहता है।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ

तर्जुमा : "क्या तुमने उस इंसान को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश-ए-नफ़्स को ही अपना माबूद बना लिया?" (सूरह अल-जासिया : 23)

5. शोहरत की चाहत

नाम, इज़्ज़त, तारीफ़, लोगों की वाहवाही, रियाकारी, खुदपसंदी और तकब्बुर की चाहत भी दुनिया की मुहब्बत की बड़ी निशानी है। सच्चा मोमिन अपने हर अमल से सिर्फ अल्लाह त'आला की रज़ा चाहता है, लोगों की तारीफ़ नहीं।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ

तर्जुमा : **"उन्हें तो सिर्फ यही हुक्म दिया गया था कि वे ख़ालिस अल्लाह त'आला ही की इबादत करें।"** (सूरह अल-बय्यिनह : 5)

नतीजा

जो इंसान इन पाँच अलामतों को अपने दिल से निकालने की कोशिश करता है, उसके दिल में अल्लाह त'आला की मुहब्बत, आख़िरत की फ़िक्र और सच्ची तौबा की चाहत पैदा होने लगती है। इसलिए हक़ीक़ी तौबा का रास्ता तर्के-दुनिया, यानी दुनिया की मुहब्बत को दिल से निकालने से होकर गुज़रता है।

माल की मुहब्बत ही दुनियादारी है

हज़रते अताअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह त'आला की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर (ख़तरात) से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 38, पेज 251)

मिटनेवाली दुनिया का ऐतबार करता है
क्या समझ के तू आखिर इसे प्यार करता है

दुनिया की चाहत सबसे बड़ा गुनाह है :-

अल्लाह त'आला ने हजरते मूसा अलेहिस्सलाम की तरफ वही की ऐ मूसा! दुनिया की मुहब्बत में मशगूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, बाब 31)

शिर्क की शुरूआत दुनियावी चाहत के वजह से

हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल है कि दुनिया की मुहब्बत में डूब कर बनी इस्राईल ने अल्लाह त'आला की इबादत को छोड़ कर बुतों की इबादत शुरू की थी। [मुकाशफ़तुल कुलूब, बाब 31]

दुनियावी चाहत के वजह से कलमा रद्द

हदीस: हज़रत अनस बिन मलिक रदिअल्लाह त'आला अन्हु से रिवायत है के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: **" कलमा बंदों से खुदा के अजाब को रोकता है जब तक के बंदे दुनिया के मामले को दिन के मामले पर तरजीह न दे, लेकिन जब वो अपनी दुनिया के मामले को दिन के मामले पर तरजीह दे और फिर कलमा पढ़े तो ये कलमा उन पर रद्द कर दिया जाता है और अल्लाह त'आला फरमाता है के तुम झूठे हो।** (इब्ने अबिददुनिया)

दुनियादारी के वजह से आमाल बेकार

अल्लाह त'आला फ़रमाता है: (तर्जुमा) **क्या हम तुम्हें बतादें कि सब से बढ़कर नाक़िस (अधूरा) अमल किन के हैं, उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई और वो इस ख़याल में हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं।** (सुरह का'फ, आयत न. 103-104)

हजरते विश्र रहमतुल्लाह अलैह से कहा गया कि फला आदमी मर गया है. आपने फ़रमाया उस ने दुनिया को जमा किया और आखिरत को जाया कर दिया, लोगों ने कहा वह तो यह यह नेंकिया किया करता था। आप ने

फ़रमाया जिस के दिल में दुनिया की मुहब्बत हो उसे नेकी नफा नहीं पहुंचाती। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 31, पेज 206)

दुनियादारों पर खास 4 अज़ाब

हजरते अली रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है हुजूर ﷺ ने फ़रमाया जब लोग फकीरों से दुश्मनी रखें, दुनियावी शौकत व हशमत का इजहार करें और रुपया जमा करने पर लालची हो जायें तो अल्लाह त'आला उन पर चार मुसीबतें नाजिल फरमाता है,1 कहत साली, 2 जालिम बादशाह (ज़ालिम प्रधानमंत्राी), 3 खयानत दार हाकिम और , 4. दुश्मनों की हैबत (कुफ़्फार)।

मोबलिचिंग दुनियावी चाहत के वजह से

हदीस: हजरत सोबान रदिअल्लाह त'आला अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया अन करीब तमाम धर्म की कौमे तुम पर यूं टूट पड़ेगी जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाह त'आला अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फ़रमाया मुसलमान उस जमाने में ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग (कोई काम का नही) की तरह, दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाह त'आला अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फ़रमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफरत (सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245)

दुनियादारी के वजह से हुकूमत का छिन'ना

रसूल ﷺ ने फ़रमाया इस उम्मत को बशारत दे दो कि दीनदारी के वजह से ही उसको बुज़ुर्गी (मर्तबा) हासिल है और शहरों पर हुकूमत (कब्जा और गिरफ्त), जब तक वह दीन का काम दुनिया के हुसूल के लिए न करें यानी मुसलमानों को दुनिया में उस वक्त तक बुज़ुर्गी और दुनिया के शहरों पर उनकी हुकूमत रहेगी जब तक वह दीन का काम दुनिया हासिल करने के लिए नही करेंगे, उनके आमाल खालिस रहेंगे। रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि आखिरत

की नियत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह त'आला दुनिया भी देता है लेकिन दुनिया की नियत पर अमल करने वाले को) आखिरत नही मिलेगी। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

हलाकत दुनियावी चाहत के वजह से

फ़रमाने नबवी है दुनिया सब्ज़ (खुश आइन्द) और मीठी है। अल्लाह त'आला ने तुम्हें अपना ख़लीफा बना कर भेजा है और वह तुम्हारे आमाल से बा-ख़बर है। बनी इस्राईल पर जब दुनिया फ़राख़ कर दी गई तो उन्होंने अपनी सभी कोशिशें, जेवरात, कपड़ों, औरतों और इतरियात के लिए वक्फ कर दी थी। (और उनका अंजाम तुम ने देख लिया यानी वो हलाक हो गये) (मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 188)

अल्लाह त'आला के नज़दीक दुनिया की हकीकत

हदीस : **अगर दुनिया की कद्र अल्लाह त'आला के नजदीक एक मच्छर के पर के बराबर होती तो एक घूंट इसमें से काफिर को न देता दुनिया जलील है जलीलों को दी गई, अल्लाह त'आला जब से दुनिया बनाया है कभी इसकी तरफ रहमत की नजर न फरमाई।**(फ़ैजने आला हजरत; पेज 162)

हदीस की तशरीह:

दुनिया की हक़ीक़त = मच्छर के पर से भी कम - अल्लाह त'आला के नज़दीक दुनिया की कोई क़ीमत ही नहीं। इसलिए वो काफ़िरों को भी दुनिया दे देता है। अगर इसकी क़ीमत होती तो सिर्फ अपने महबूब बंदों को देता।

"जलील है जलीलों को दी गई" इसका मतलब दुनिया खुद ज़लील है, और इसे चाहने वाले भी ज़लील हो जाते हैं। इसलिए अल्लाह त'आला ने इसे अपने दुश्मनों के लिए छोड़ दिया।

"अल्लाह त'आला ने जब से दुनिया बनाई, कभी रहमत की नज़र नहीं फरमाई"मतलब: दुनिया आराइस की जगह नहीं है, सज़ा और आजमाइश की जगह है। ये आराम और सुकून की जगह नहीं। सुकून तो सिर्फ आख़िरत में है।

हुजूर के नज़दीक दुनिया की हकीकत

हदीस : हुज़ूर सललल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मुर्दा बकरी के पास से गुजर हुआ। आप ने फ़रमाया क्या यह बकरी अपने मालिक को पसन्द है? सहाबए किराम ने अर्ज की इस की बदबू ही की वजह से तो यहां फेंक दिया गया है। आप ने फ़रमाया बखुदा दुनिया अल्लाह त'आला के यहां इस मुर्दा बकरी से भी ज्यादा बेकार है ।(मुकाशफतुल , बाब 31)

दुनिया चाहने वालों का दुनिया मे अंजाम

हदीस : फरमाने नबवी ﷺ है जिस की सब से बड़ी चाहत दुनिया (यानी मौज मस्ती, फिजूल मशगूलियत, दौलत, ख्वाहिशात, शोहरत) हासिल करना है, अल्लाह त'आला त' आला के यहां उसका कोई हिस्सा नहीं है,

अल्लाह त'आला त' आला ऐसे के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत कर देता है।

1. **दाइमी ग़म** – हर वक्त दिल परेशान रहता है

2. **दाइमी मशगूलियत** – कभी सुकून और इत्मीनान नसीब नहीं होता

3. **रिज़्क में बे-बरकती** – income बहुत, लेकिन बरकत खत्म

4. **ना पूरी होने वाली आरज़ूएं** – चाहतें खत्म नहीं होतीं, बल्कि बढ़ती ही जाती हैं। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 189)

दुनियादारो को अज़ाब

दुनियादार मुसलमान जब दीन से दूरी इख़्तियार करता है तो अल्लाह त'आला और उसके रसूल के फ़रमान को भूल कर अपने दुश्मन जैसे नफ़्से अमारा, शैतानी वासवासों और दुनियावी चाहतों के मुताबिक अपने दिल में नफ़्सानी, शैतानी व दुनियावी खस्लतों (गुण) को बसा लेता है जो अल्लाह त'आला व रसूल के नाराजगी का सबब बनता है। इसी नाराजगी के बाइस अल्लाह त'आला का अजाब उन पर नाज़िल होता है जो मुसीबत कहलाता है

इसे सज़ा भी कहा जा सकता है | सज़ा के हक़दार लोग जिस्म व रूह व दिल तीनों में मुब्तीला रहते है जबकि आज़माइश वालें सिर्फ ज़िस्मानी तक़लीफ का सामना करते है उनका दिल में सुकून भरपूर रहता है|

गुनहगार अज़ाब का हक़दार

कुरआन में है (तर्जमा): **''तो डरें वो जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फित्ना पहुंचे या उनपर दर्दनाक अज़ाब पड़े|"**(सूरह नूर, आयात नं. 63)

दुनियदारों से अल्लाह त'आला की नाराज़गी

रिवायत : हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख्स के पास से गुज़रे| जब आप वापस हुए तो वह शख्स वैसे ही रो रहा था| हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया:

"या अल्लाह त'आला! तेरा बंदा तेरे डर से रो रहा है|"अल्लाह त'आला ने इर्शाद फ़रमाया:

"ऐ मूसा! अगर इसके आँसुओं से रास्ते बह जाएँ और इसके उठे हुए हाथ टूट जाएँ, तब भी मैं इसे माफ़ नहीं करूंगा| क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है|" [मुकाशफ़तुल क़ुलूब, बाब 31 - इमाम ग़ज़ाली रह.]

दुनिया चाहने वालों का आख़िरत में अंजाम

कुरआन में है

आयत 1- **तर्जुमा : "जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिये उसकी खेती बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं"| (सूरह अश-शूरा, 20)**

आयत 2 - **तर्जुमा : "जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुनिया की जिन्दगी ने उन्हें फरैब दिया तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्होंने**

इस दीन (आखिरत) के मिलने का खयाल छोडा था।(शुरह अराफ आयत न 57)

हदीस मे है :

फ़रमाने नबी ﷺ है कि:

"क़ियामत के दिन कुछ लोग आएंगे जिनके आमाल-ए-हसना तिहामा के पहाड़ों के बराबर होंगे, मगर उन्हें जहन्नम की तरफ़ ले जाया जाएगा।"सहाबा-ए-किराम ने पूछा: "या रसूलल्लाह ﷺ! क्या वो नमाज़-रोज़ा अदा करने वाले होंगे?"

फ़रमाया: "हां! वो रोज़ादार और रात का एक हिस्सा इबादत में गुज़ारने वाले होंगे, मगर वो दुनिया के चाहने वाले होंगे।" [मुकाशफ़तुल क़ुलूब, बाब 31)

हदीस-ए-कुदसी :

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "क़यामत के दिन सबसे पहले जिन 3 शख्सों के खिलाफ फैसला सुनाया जाएगा, वो ये होंगे..."

(1) शहीद उसे अल्लाह त'आला के सामने लाया जाएगा। अल्लाह त'आला उसे अपनी नेअमतें याद दिलाएगा। वो उनका एतराफ करेगा।

अल्लाह त'आला पूछेगा: "तूने मेरी नेअमतों का क्या हक़ अदा किया?"

वो जवाब देगा: "ऐ अल्लाह त'आला! मैं तेरे रास्ते में जिहाद करता रहा यहाँ तक कि शहीद हो गया।"

अल्लाह त'आला फरमाएगा: "तू झूठ कहता है। तूने तो जिहाद इसलिए किया था कि लोग तुझे 'बहादुर' कहें। सो वो दुनिया में कहा जा चुका।"

फिर उसके बारे में हुक्म दिया जाएगा और उसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

(2) आलिम और क़ारी होगा जिसने इल्म-ए-दीन और कुरआन करीम की तालीम हासिल की होगी और दूसरों को इसकी तालीम दी होगी। उसे

अल्लाह त'आला के सामने लाया जाएगा। अल्लाह त'आला उसे अपने इनामात याद दिलाएगा, वो सबका एतराफ करेगा।

अल्लाह त'आला पूछेगा: "तूने मेरे इनामात का क्या हक़ अदा किया?"

वो जवाब देगा: "ऐ अल्लाह त'आला! मैंने इल्म-ए-दीन और कुरआन करीम की तालीम हासिल की और तेरी खुशनूदी के हुसूल के लिए दूसरों को तालीम दी।"

अल्लाह त'आला फरमाएगा: "तू झूठ कहता है। तूने तो इल्म इसलिए हासिल किया था कि लोग तुझे 'आलिम' कहें। और कुरआन इसलिए पढ़ा था कि लोग तुझे 'क़ारी' कहें। सो वो दुनिया में कहा जा चुका।"

फिर उसके बारे में हुक्म दिया जाएगा और उसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

(3) सखी और मालदारवो शख्स होगा जिस पर अल्लाह त'आला ने वुसअत की होगी और हर किस्म का माल व दौलत अता किया होगा। उसे अल्लाह त'आला के सामने लाया जाएगा। अल्लाह त'आला उसे अपने इनामात की याददिहानी कराएगा। वो सबका एतराफ करेगा।

अल्लाह त'आला फरमाएगा: "तूने इन इनामात का क्या हक़ अदा किया?"

वो जवाब देगा: "ऐ अल्लाह त'आला! मैंने कोई रास्ता ऐसा नहीं छोड़ा जहाँ तुझे खर्च करना पसंद हो और मैंने खर्च ना किया हो।"

अल्लाह त'आला फरमाएगा: "तू झूठ कहता है। तूने तो इसलिए खर्च किया था कि लोग तुझे 'सखी' कहें। सो वो कहा जा चुका।"

फिर उसके बारे में भी हुक्म दिया जाएगा और उसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। [सहीह मुस्लिम, तिर्मिज़ी]

इस हदीस का खुलासा: ये तीनों काम - जिहाद, इल्म, और सदका - इस्लाम के सबसे बड़े आमाल हैं।

लेकिन अगर नियत में "दुनिया की चाहत" यानी "लोगों की वाह-वाही" आ गई, तो सबसे बड़ा अमल भी जहन्नम जाने का सबब बन जाएगा|सबक: दुनिया चाहने वालों का अंजाम यही है| अमल बड़ा हो या छोटा, अल्लाह त'आला सिर्फ नियत की खालिसी देखता है|अल्लाह त'आला हमें रिया और नाम-नुमूद से महफ़ूज़ रखे और हर अमल सिर्फ अपनी रज़ा के लिए करने की तौफ़ीक़ दे| आमीन

बाब 3

(दुनियावी चाहत से दीनी चाहत की ओर)

पैग़ाम : दुनिया की चाहत से निकलकर, अल्लाह त'आला की रज़ा की चाहत की ओर बढ़ो; क्योंकि यही चाहत इंसान को मोमिन बनाती है, दिल को ज़िन्दा करती है अमल करने के लायक बनाती है और दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाबी का रास्ता खोलती है।"

जागना है तो जाग ले अफ़लाक के साए तले
हश्र में सोना पड़ेगा खाक के शाये तले

तर्के दुनिया और तौबा की चाहत

इंसान की ज़िंदगी का सबसे बड़ा मक़सद अल्लाह त'आला की रज़ा हासिल करना और आख़िरत की कामयाबी है। लेकिन जब दिल में दुनिया की मुहब्बत घर कर लेती है, तो यही मुहब्बत इंसान को अपने असली मक़सद से ग़ाफ़िल कर देती है। इसलिए बुज़ुर्गाने दीन ने फ़रमाया है कि "दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है।" जब तक दिल दुनिया की मोहब्बत, उसकी रंगीनियों और उसकी लज़्ज़तों में गिरफ़्तार रहेगा, तब तक सच्ची तौबा और अल्लाह त'आला की तरफ़ रुजूअ (वापसी) आसान नहीं होगी इसलिए तर्के दुनिया की चाहत दिल मे पैदा करे।

तर्के दुनिया (दुनिया से बे-रग़बती) की हक़ीक़त

तर्के दुनिया का मतलब दुनिया को छोड़ देना, रोज़ी-रोटी कमाना छोड़ देना या घर-बार और ज़िम्मेदारियों से भाग जाना नहीं है। बल्कि इसका असली मतलब दिल से दुनिया की मोहब्बत निकाल देना और अल्लाह त'आला की रज़ा को दुनिया पर तरजीह देना है। इस्लाम दुनिया से भागने का नहीं, बल्कि दुनिया में रहकर अल्लाह त'आला का फ़रमाँबरदार बनने का दीन है।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

तर्जुमा : "और जो कुछ अल्लाह त'आला ने तुम्हें दिया है, उससे आख़िरत का घर बना और दुनिया में अपना हिस्सा भी न भूलो।"
(सूरह अल-क़सस, 28:77)

यह आयत बताती है कि इस्लाम दुनिया से किनारा करने की तालीम नहीं देता, बल्कि दुनिया को आख़िरत का ज़रिया बनाने की तालीम देता है।

तौबा फर्ज़-ए-ऐन है

तौबा हर शख्स के हक़ में फर्ज़-ए-ऐन और सबसे पहला फर्ज़ है

क्योंकि कोई शख्स भी हाथ-पांव के गुनाहों से खाली नहीं। चाहे वो आलिम हो या आम।और अगर कोई इन आज़ा के गुनाह से खाली भी है तो दिल ही से उसने गुनाह किया होगा।

और अगर ये भी न होगा तो उन शैतानी वसवसों से खाली न होगा जो अल्लाह त'आला की याद से गाफिल कर देने वाले हैं।

और अगर ऐसा भी न होगा तो अल्लाह त'आला की जात व सिफात की मारिफत हासिल करने में कोताही और गफलत बरतने से तो कोई भी खाली नहीं होगा।ये तमाम सूरतें अहले ईमान के अहवाल व मकामात के एतबार से अल-कद्र मरातिब हैं।

लिहाज़ा हर हाल के लिए ताअत, गुनाह और हुदूद व शरायत जुदा-जुदा हैं। उन्हीं हुदूद की जो जिसके लिए मुअय्यन हैं पाबंदी-ए-ताअत व बंदगी है। और उनसे गफलत या उनकी मुखालफत गुनाह है।

इसलिए हर शख्स तौबा का मोहताज है। [गुनियतुत्तालिबीन, बाब-10]

फ़र्ज़-ए-ऐन की अहमियत

अल्लाह त'आला ने हर मुसलमान पर कुछ ऐसे फ़र्ज़ मुक़र्रर किए हैं, जिनका सीखना, जानना और उन पर अमल करना हर बालिग़, आक़िल मुसलमान के लिए ज़रूरी है। इसकी अदायगी के बगैर ना फ़र्ज़ कुबूल होगा, ना वाजिब और ना सुन्नत ना ही नवाफ़िल और ना ही मुस्तहब ।

कलमा शरीफ मे बातिल माअबुदो का रद्द है जो फ़र्ज़-ए-ऐन है वो इसलिए की जब तक इंसान अपना मअबुद को पहचान कर चुन न ले तब तक इंसान इबादत के लायक नहीं बनता और जब इंसान इबादत के लायक बना ही नहीं तो इबादत कर कैसे सकता है|

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

"क्या तुमने उसे देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश (नफ़्स) को अपना मअबूद बना लिया?"(सूरह अल-जासियह, 45:23)

आज मुसलमान अपने बातिल नफ़्स को मअबुद बना लिया है और हक़ीक़ी खुदा की चाहत, इताअत, मुहब्बत, रज़ा और खौफ, इबादत का जज्बा नहीं रहा | नफ़्स और शैतान की गुलामी मे अदा किया गया नमाज़, रोजा, जकात, हज्ज, सदकात यानी तमाम अमल बर्बाद कर दिया जाएगा क्योंकि ये अमल तकवा से खाली और अल्लाह त'आला व रसूल की गुलामी के दाइरे से हट कर है|

लिहाजा आज जरूरत है नफ़्स और शैतान की गुलामी यानी दुनियादारी वाली ज़िंदगी से तौबा करके दीनदारी ज़िंदगी जहां अल्लाह त'आला व रसूल की रज़ा की चाहत उसी की इताअत और उसी की मुहब्बत मे क़ायम रह कर पहले नेक बना जाए फिर नेकी किया जाए वरना बगैर नेक बने हक़ीक़ी नेकी किया ही नहीं जा सकता है|

कुरआन मे अल्लाह त'आला तअआला ने कई जगह फ़रमाया की पहले मोमिन बनो फिर नेक अमल करो

आमनू वा अमिलुस्सालिहात

मोमिन बनने के लिए नफ़्स की ख्वाहिसात, शैतानी खसलतों, दुनिया की मुहब्बत, काफिरों की मुशाबहत और मुनाफ़ीकीन की सोहबत से तौबा शर्त है बगैर इसके मुसलमान ना तो नेक बन सकता है ना ही नेकी कर सकता है , तौबा फर्जे ऐन है इसके बगैर किया हुआ अमल अल्लाह त'आला रद्द कर देगा|

तौबा की चाहत और अल्लाह त'आला का हुक़्म

बुखारी व मुस्लिम की हदीस है कि हुज़ूर ने फ़रमाया बनी इस्रायेल में एक शख़्स था जिसने निन्नानवे कत्ल किये थे, उसने तौबा करने की चाहत से दुनिया के सब से बड़े आलिम के मुतअल्लिक पूछताछ की तो लोगों ने उसे

एक राहिब (कम इल्म वाला) का पता दिया चुनान्चे वह राहिब के पास आया और उससे कहा मैंने निन्नानवे कत्ल किये हैं, क्या मेरी तौबा कबूल हो सकती है? राहिब बोला नही, तो उस आदमी ने राहिब को भी कत्ल करके सौ क़त्ल पूरे कर लिये, फिर उसने दोबारा दुनिया के सब से बड़े आलिम की तलाश शुरू की तो उसे एक आलिम का पता बताया गया, वह आलिम के पास गया और कहा कि उसने सौ क़त्ल किये हैं, क्या इसके लिए तौबा मुमकिन है? आलिम ने कहा हाँ! तेरे और तेरी तौबा के दर्मियान कौन रुकावट हो सकता है! फ्ला फ्ला जगह जाओ वहाँ अल्लाह त'आला के नेक और इबादत गुज़ार लोग (औलिया की जमाअत) रहते हैं, तुम भी वहीं जाकर उन के साथ इबादत करो और फिर अपने वतन वापस न होना क्योंकि यह बहुत बुरी जगह है।

चुनान्चे वह चल पड़ा, जब वह आधे रास्ते में पहुँचा तो उसे मौत आ गई, लिहाज़ा उस के मुतअल्लिक रहमत और अज़ाब के फ़रिश्तों का आपस में झगड़ा हो गया, रहमत के फरिश्तों ने कहा यह ताइब होकर अपना दिल रहमते ख़ुदावन्दी से लगाये आ रहा था, अज़ाब के फरिश्तों ने कहा इस ने कभी कोई नेकी नहीं की, तब उन के पास आदमी की शक्ल में एक फरिश्ता आया जिसे उन्होंने अपना हकम (इंसाफ करने वाला) मान लिया, उस फरिश्ता ने कहा तुम ज़मीन नाप लो, वह जिस बस्ती के क़रीब था वह उन्हीं में गिना जाएगा, वह शख़्स जब मरा तो नेक लोगों के बस्ती से दूर थे और जहाँ से चला था यानी बुरो को बस्ती से क़रीब थे लेकिन अल्लाह त'आला ने बुरों की बस्ती की जमीन की तरफ वही फ़रमाई, उससे हुक़्म दिया दूर हो जा और नेकों की बस्ती की जमीन को हुक़्म दिया तू क़रीब हो जा और फ़रमाया इन बस्तियों की दूरी नापो तो फरिश्तों ने उसे एक बालिश्त नेकों की बस्ती से क़रीब पाया और उसे बख़्श दिया गया। (मुकाशफुतुल क़ुलूब, बाब 53)

इब्रत: इस वाकिया से ये पता चला कि बंदा अगर नेक चाहत के बाद उस पर अमल न भी कर सका तो अल्लाह त'आला का हुक़्म में बदलाव होगा और निजात पायेगा।

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है।

तौबा और तक़्वा की चाहत

इंसान गुनाहों से पाक नहीं है। हर इंसान से कभी न कभी ग़लती और गुनाह हो जाते हैं। लेकिन अल्लाह त'आला ने अपनी रहमत से तौबा का दरवाज़ा खुला रखा है। तौबा इंसान के गुज़रे हुए गुनाहों को धो देती है, जबकि तक़्वा उसे आने वाले गुनाहों से बचाने की ताक़त देता है। इसलिए एक मोमिन की ज़िंदगी दो चीज़ों पर क़ायम होनी चाहिए—तौबा और तक़्वा। तौबा माज़ी की इस्लाह करती है और तक़्वा मौजूदा और मुस्तक़बिल की हिफ़ाज़त करता है।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا

तर्जुमा : **"ऐ ईमान वालो! अल्लाह त'आला की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा करो।"** (सूरह अत-तहरीम : 8)

एक दूसरी जगह अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ

तर्जुमा : **"बेशक अल्लाह त'आला तौबा करने वालों से मोहब्बत करता है और पाक रहने वालों से भी मोहब्बत करता है।"** (सूरह अल-बक़रह : 222)

तौबा की कबुलियत की 4 अलामतों

किसी दाना (इल्म वाले) से पूछा गया कि क्या तौबा करने वाली कोई अलामत (पहचान) है जिससे यह पहचाना जा सके कि उसकी तौबा क़बूल हो चुकी है उन्होंने कहा हां 4 अलामतों से पहचाना जा सकता है

सच्चों से दोस्ती : बुरे दोस्तों से अलग होकर सच्चें को अपना दोस्ता बनाना और सच्चा वही है जो माल व दौलत से मुहब्बत नहीं करता।

हक़ का मुतलाशी : हर किस्म के गुनाहों से कटकर अल्लाह ताआला की अताअत की जानिब तवज्जो होना।

तर्के दुनिया : दिल को हर किस्म की दुनियवी ख़्वाहिशात से खाली करके फ़िक्र ए आख़िरत से दिल आबाद होना।

अमल में दुरूस्तगी : अल्लाह पाक ने जिस रिज्क की जिम्मेवारी ले रखी है दिल को उन फ़िक्र से खाली कर ले और हुक्मे इलाही के बजाआवरी (अमल) में कोई सुस्ती और बहाना न मारे जिस शख्स में यह चार अलामते पाई जाए तो यकीनन वह उन लोगों में से होगा जिससे अल्लाह राजी हो जाता है

'अल्लाह फरमाता है' : **"बेशक अल्लाह पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को** (सूरह- बक़रह, आयत न 222) (तंबीहूल ग़फ़िलीन, जिल्द 1, सफा 159)

राहे खुदा मे कोशिश

अल्लाह त'आला का फ़रमान है (तर्जुमा) : **"जो अल्लाह त'आला की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले को कोशिश करता है बेशक अल्लाह त'आला बेपरवाह है सारे जहां से।"** (सूरह - अंकबूत, आयत न. 6)

गुनाहों से बचने की चाहत

येह बात अच्छी तरह जेहन नशीन कर लीजिये कि गुनाहों से मुतनब्बेह करने वाली बातों में ख़ौफ़े इलाही, उस के इन्तिकाम का अन्देशा, उस की हैबत और शानो शौकत, उस के अज़ाब का डर और उस की गिरिफ्त बहुत नुमायां हैसिय्यत रखती हैं,

फ़रमाने इलाही है कि (तर्जमए कन्जुल ईमान): **"तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के खिलाफ करते हैं कि उन्हें कोई फितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अज़ाब पड़े ।"** (सूरह नूर, आयत 63)

मरवी है कि हुज़ूर ﷺ एक जवान के पास तशरीफ़ लाए जो नज़्ज़ के आलम में था, आप ने फ़रमाया अपने आप को किस आलम में पाते हो ? अर्ज किया: या रसूलल्लाह ! मैं अल्लाह त'आला की रहमत का उम्मीद वार हूं और अपने गुनाहों से खौफ़ज़दा हूं। हुज़ूर ने यह सुन कर फ़रमाया कि किसी बन्दे के दिल में ऐसी दो बातें जम्अ नहीं होती मगर अल्लाह त'आला उस बन्दे की उम्मीद पूरी कर देता है और गुनाहों के ख़ौफ़ से उसे बे नियाज़ कर देता है। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 52)

वह्ब बिन वर्द से मरवी है: हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि जन्नत की महब्बत और जहन्नम का ख़ौफ़ मुसीबत के वक़्त सब्र देता है और येह दो चीजें दुन्यावी लज़्ज़तों, ख़्वाहिशात और ना फ़रमानियों से दूर कर देती हैं।

हज़रते हसन का कौल है ब ख़ुदा तुम से पहले ऐसे लोग हो गुजरे हैं जो गुनाहों को इतना अज़ीम समझते थे कि वोह बे हद व बे हिसाब सोने चांदी की बख़्शिशों को भी अपने एक गुनाह से नजात का ज़रीआ नहीं समझते थे।

तलाश-ए-हक़ की शुरूआत

जब अल्लाह त'आला किसी बंदे पर करम फ़रमाता है तो उसकी तलाश दुनिया से हटकर ख़ालिक़ की तरफ़ मुड़ जाती है।

वह रज़ा-ए-इलाही की तलाश में निकल पड़ता है।

और अगर अल्लाह त'आला चाहे तो उसे किसी कामिल मुर्शिद की सोहबत नसीब होती है, जहाँ ज़िक्र, तज़किया, इस्लाह और मुजाहदा के ज़रिए रूह को उसकी अस्ल ग़िज़ा मिलने लगती है।

मौलाना रूम रहमतुल्लाहि अलैह

आप फ़रमाते हैं:

"अगर यार नहीं मिला तो उसकी तलाश क्यों नहीं करते? और अगर मिल गया है तो फिर कद्र क्यों नहीं करते ?"

सुल्तान बाहू रहमतुल्लाहि अलैह

"अगर तू दरवेश के मज़हब-ए-इश्क़ से बेख़बर है, तो किसी दरवेश के पास जाकर सीख क्यों नहीं लेता?"

हक़ का मुतलाशी बनने की चाहत

ऐ मेरे अज़ीज़! अगर तू सचमुच अपने रब की रज़ा चाहता है, तो किसी शख़्स, जमाअत या दुनिया की वाहवाही का नहीं, बल्कि हक़ का मुतलाशी बन। अपने दिल में यह तलब पैदा कर कि मुझे वही बात मिले जो अल्लाह त'आला और उसके रसूल ﷺ के यहाँ हक़ है, चाहे वह मेरी पुरानी राय के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो। अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात, तंजीमी तअस्सुब, जाहिलाना जज़्बात और ज़िद को अपने फ़ैसलों पर हावी मत होने दे। ख़ौफ़-ए-ख़ुदा और इश्क़-ए-मुस्तफ़ा ﷺ की रौशनी में उस सीधे रास्ते की तलाश कर, जहाँ सही अक़ीदा और नेक अमल एक साथ मिलते हों।

अपने लिए क़ुरआन-ए-करीम और सहीह सुन्नत को सबसे बड़ा मीज़ान बना। किसी इंसान की अंधी पैरवी मत कर, बल्कि हर बात को दलील की कसौटी पर परख। अगर आज तुझे मालूम हो जाए कि तू किसी मसले में ग़लत था, तो अपनी ग़लती मान लेने में शर्म महसूस मत कर। याद रख, हक़ को क़ुबूल कर लेना हार नहीं, बल्कि यही सबसे बड़ी कामयाबी और अल्लाह त'आला की रहमत का निशान है।

दलील को देख, शख़्सियत को नहीं; हिदायत को देख, तादाद को नहीं। हो सकता है हक़ पर चलने वाले कम हों, लेकिन अल्लाह त'आला के यहाँ हक़ की पहचान लोगों की भीड़ से नहीं, बल्कि उसके सही होने से होती है। इसलिए अपने दिल को हमेशा हक़ की तलाश में बेचैन रख। जब तक तुझे हक़ न मिल जाए, तलाश जारी रख; और जब हक़ मिल जाए, तो फिर उस पर इस्तिक़ामत के साथ क़ायम रह।

याद रख! हक़ का मुतलाशी कभी गुमराह नहीं होता, क्योंकि वह लोगों की नहीं, अपने रब की तलाश में निकलता है। जो सच्चे दिल से हक़ का

तलबगार बन जाता है, अल्लाह त'आला उसे हिदायत की मंज़िल तक ज़रूर पहुँचा देता है।

सच्चा मुरीद बनने की चाहत

सच्चा मुरीद वह नहीं जो सिर्फ किसी पीर के हाथ पर बैअत कर ले, बल्कि सच्चा मुरीद वह है जो हक़ की तलाश में सच्चे पीर की तलाश करे। उसकी पहली तलब पीर नहीं, बल्कि अल्लाह त'आला की रज़ा होती है। वह ऐसे मुर्शिद की खोज करता है जो उसे अपनी तरफ़ नहीं, बल्कि अल्लाह त'आला और उसके रसूल ﷺ की तरफ़ बुलाए; जो उसके अक़ीदे को सही करे, उसके नफ़्स का तज़किया करे और उसके अख़लाक़ को सँवारे।

सच्चा मुरीद अपने मुर्शिद से करामात नहीं, बल्कि इस्तिक़ामत सीखता है; वज़ीफ़ों की बहुतायत नहीं, बल्कि सुन्नत की पैरवी सीखता है; और दुनिया हासिल करने का तरीका नहीं, बल्कि आख़िरत संवारने का रास्ता सीखता है। वह अपने पीर से मोहब्बत ज़रूर करता है, लेकिन उस मोहब्बत को कभी क़ुरआन और सुन्नत से ऊपर नहीं रखता।

याद रख! जो पीर अपने मुरीद को अल्लाह त'आला से जोड़ दे, वही सच्चा पीर है; और जो मुरीद अपने पीर के बताए हुए क़ुरआन व सुन्नत के रास्ते पर चल पड़े, वही सच्चा मुरीद है।

सच्चा मुरीद अपने मुर्शिद की हर बात को इसलिए नहीं मानता कि वह मुर्शिद है, बल्कि इसलिए मानता है कि उसका मुर्शिद उसे दीन-ए-हक़, शरीअत और सुन्नत के मुताबिक़ राह दिखाता है। उसका मक़सद शख़्सियत-परस्ती नहीं, बल्कि तलब-ए-मौला होता है। जब मुरीद की तलाश सच्ची होती है, तो अल्लाह त'आला उसे ऐसा मुर्शिद नसीब फ़रमाता है जो उसे अपनी नहीं, बल्कि उसके रब की पहचान करा दे।

अल्लाह त'आला की रज़ा चाहो

क़ुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है (तर्जमा): **जो अल्लाह त'आला को राज़ी करना चाहते हैं उन्हीं का काम बना (यानी वही कामयाब हुआ)।** (सूरह रूम, आयत न 38)

अल्लाह त'आला की रज़ा सबसे बड़ी है

क़ुरआन में है: (तर्जमा) :**"अल्लाह त'आला की रज़ा सबसे बड़ी है, यही (अल्लाह त'आला को राजी करना) है बड़ी कामयाबी हासिल करना।** (सुरह तौबा, आयत न. 72)

जान लो दिल से कोई भी नियत, ज़िस्म से कोई भी फेल (काम) करने और ज़बान से कोई भी बात बोलने से पहले अल्लाह त'आला की रज़ा की चाहत होना चाहिए, मनमर्जी यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के लिए नहीं , शैतान की इताअत के लिए नहीं, दुनिया हुसूली के लिए नही और न ही दौलत की लालच व नामो नमूद के लिए। अल्लाह त'आला की रज़ा सबसे बड़ी है तो बड़ी चीज की चाहत होनी चाहिए फानी व कलील दुनिया, मालो दौलत की चाहत न हो। दुनिया में माल व दौलत सिर्फ ज़िस्मानी जरूरत के लिए और इसकी दिली (क़ल्बी) चाहत व मोहब्बत सरासर हलाक़त है।

अल्लाह त'आला तौबा से राज़ी होता है

फरमाने नबवी ﷺ है कि रहमते ख़ुदावन्दी को उस इन्सान की तौबा से ज़्यादा खुशी होती है (मिसाल) जो बीरान जंगल में अपनी सवारी पर खाने पीने के सामान लादे सफर कर रहा हो और वहां आराम की ग़रज़ से रुक जाए, वह सर रखे तो उसे नीद आ जाये.. जब सो कर उठे तो उस की सवारी सामान के साथ गाइब हो और वह उस की तलाश में निकले यहां तक कि सख़्त गर्मी और प्यास से बद-हाल होकर उसी जगह वापस आ जाये जहां वह पहले सोया था और थक हार के मौत के इन्तेज़ार में अपने बाज़ू का तकिया बना कर लेट जाये, अब जो वह जागा तो उसने देखा उस की सवारी सामान के साथ उस के करीब मौजूद है। इसे देखकर वह बहुत खुश हुआ । अल्लाह त'आला को बन्दे की तौबा से उस सवारी वाले शख़्स से भी ज्यादा खुशी होती है जिस का सामान जागने के बाद उस को मिल गया हो। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 34, पेज 229)

अल्लाह तआला कैसे राज़ी होता है?

फरमाने नबवी ﷺ है कि जो शख्स अल्लाह तआला से मामूली रिज़्क पर राज़ी हो गया, अल्लाह तआला उसके मामूली आमाल पर राज़ी हो जाता है। और फरमाया कि जब अल्लाह तआला किसी बंदे से राज़ी हो जाता है तो उसे आज़माइश में डाल देता है। अगर वह सब्र करे तो अल्लाह तआला उस बंदे को पसंद कर लेता है, और अगर वह आज़माइश पर भी राज़ी हो जाता है तो अल्लाह तआला उसे अपने खास बंदों में चुन लेता है। [मुकाशफ़तुल क़ुलूब, बाब 73, सफा 433]

अल्लाह तआला कब राज़ी होगा

हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम के वाकिआ में है कि बनी इस्राईल ने उनसे कहा कि अल्लाह तआला से हमारे लिए कोई ऐसा अमल दरयाफ्त कीजिए जिसके सबब वह हमसे राज़ी हो जाए। मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की, "ऐ अल्लाह! तूने इनकी गुज़ारिश सुन ली, इन्होंने क्या कहा है?" अल्लाह तआला ने फरमाया, "ऐ मूसा! उनसे कह दो कि ये मुझसे राज़ी हो जाएँ यानी मेरे दिए हुए कम व ज़्यादा पर राज़ी हो जाएँ, मैं उनसे राज़ी हो जाऊंगा।" [मुकाशफ़तुल क़ुलूब, बाब 73]

बाब 4

नबी ﷺ से मुहब्बत की चाहत

महब्बते रसूल की अहमियत आगे इसी किताब में पढ़कर उस इल्म पर अमल करने की चाहत पैदा करे यानी नबी से सबसे ज्यादा महब्बत की चाहत और इसकी अलामत नबी की सुन्नत को अपनाना है, उनकी इताअत (फरमाबरदारी) करना है उन्ही के लिए जिस्म व जान को कुर्बान करना है|

पीरो मुर्शिद हुजूर ताजुश्शरीआ ने खूब कहा है

ना समझ मरते हैं ज़िन्दगी के लिए
जीना मरना है सब कुछ नबी के लिए

रसूल ﷺ से महब्बत का शरअई हुक्म

इस्लाम में दाखिल होने के बाद हर मोमिन पर सबसे ज्यादा हक़ हुजूरे अक़दस से मुहब्बत करना है क्योंकि मुहब्बते रसूल ही ईमान है बाकी ईमानी खसलते आज़ा के मानिंद है जबकि कोई भी ज़ाहिरी अमल ईमान का हिस्सा नहीं | अल्लाह त'आला ने अपने बंदों को नबी ﷺ से सबसे ज्यादा मुहब्बत करने का हुक़्म इसीलिए दिया है क्योंकि नबी ﷺ ही अल्लाह त'आला का दीन है हमारे आका ही हक़ का पहचान बताने वाले और हक़ को हम तक पहुंचाने वाले है जब इन से महब्बत हो जाये तो हक व दीन से खूद ब खूद महब्बत हो जाएगा और नेक अमल तो ईमान के बाद करने का हुक़्म हुआ है|

चुनांचे इरशादे रब्बानी है: (तर्जमा): **"अगर तुम्हारे बाप तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा, तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिस के नुकसान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसंद का मकान अल्लाह त'आला और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहाँ तक कि अल्लाह त'आला अपना हुक्म लाए और अल्लाह त'आला फासिकों को राह नही देता|"** (सूरह तौबा, आयत: 24)

इस आयते करीमा से वाज़ेह है कि एक मोमिन पर यह फ़र्ज़े ऐन है कि वह माँ बाप, भाई बहन, आल व औलाद, खानदान रिश्तेदार, माल व दौलत, दुकान व मकान ग़र्ज़ कि सारी चीज़ों से ज़्यादा आप से मुहब्वत करे यानी किसी दूसरी चीज़ की मुहब्बत अल्लाह त'आला व नबी ﷺ की मुहब्बत पर ग़ालिब न आने पाए, गोया मुहब्बते रसूल ही मक़सदे ज़िन्दगी है यह न हो तो ज़िन्दगी का लम्हा लम्हा बेकैफ, सारे मशाग़िल बेसूद और ताआत व इबादात मरदूद, इसी लिए खुद नबीए करीम ﷺ भी अपने मानने वालों को अपनी मुहब्बत की तरगीब दी है।

चुनांचे इरशाद हैः तर्जमाः **"तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के वालिदैन और औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा उसके नज़दीक महबूब न हो जाऊँ।"** (बुख़ारी, जिल्द 1, सफाः 7)

यानी ईमान की मज़बूती और अकमल के लिए तमाम चीजों और तमाम मख़लूक़ से ज्यादा अल्लाह त'आला के रसूल यानी हमारे नबी से मुहब्बत करने का हुक़्म है यही ईमान है।

फ़रमाने आला हज़रत

आ'ला हज़रत अपनी किताब तमहीदे ईमान में लिखते हैंः यह हदीस सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में अनस इब्ने मालिक अनसारी रदीअल्लाह त'आला त'आला अन्हु से मरवी है इसमें तो यह बात साफ फ़रमा दी कि जो "हुज़ूरे अकदस ﷺ से ज़्यादा किसी को अज़ीज़ (महबूब) रखे हरगिज़ मुसलमान नहीं"।

मुसलमानों कहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ को तमाम जहान से ज़्यादा महबूब रखना मदारे ईमान व मदारे नजात हुआ या नहीं? कहो हुआ और ज़रूर हुआ। यानी उन्ही की महब्बत ईमान है और उसी से नजात हासिल होगी। (तम्हीदे ईमान, पेज 6)

"मोहम्मद की मोहब्बत दीन-ए-हक़ की शर्त-ए-अव्वल है,
इसी में हो अगर खामी तो सब कुछ ना-मुकम्मल है।"

हुज़ूर ﷺ की महब्बत ही निजात है

एक देहाती सहाबी, हज़रते ज़ुल खवेसरा यमानी रदीअल्लाह त'आला त'आला अन्हु, आका करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु त'आला अलैका व आलिका वसल्लम कियामत कब आएगी ?

तो आका करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैका व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम ने कियामत के लिये क्या तैय्यारी की है?

तो सहाबी ए रसूल ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु त'आला अलैका वसल्लम! मेरे पास इसके सिवा और कुछ तैय्यारी नहीं है कि मैं अल्लाह त'आला और उसके रसूल सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करता हूँ। आका करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सहाबी से यह सुन कर फ़रमायाः कियामत के दिन उसी के साथ रहोगे जिस के साथ महब्बत रखते हो।(अनवारुल बयान, पेज 309)

हश्र महबूब के साथ होगा

हज़रते इमाम बुखारी रदीअल्लाह त'आला त'आला अन्हु ने यह रिवायत भी नकल की है कि हज़रत अनस रदीअल्लाह त'आला त'आला अन्हु ने यह बशारत सुन कर फ़रमायाः तर्जुमाः मैं आका करीम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम और अबू बक्र व उमर (रदीअल्लाह त'आला त'आला अन्हुमा) से महब्बत रखता हूँ लिहाज़ा मैं यह उम्मीद रखता हूँ कि कियामत के दिन में उन लोगों के साथ ही मैं रहूँगा, अगरचे मेरा अमल कभी भी उन हज़रात के आ'माल के बराबर नहीं हो सकता। (बुखारी शरीफ, जि. स. 52)

न ताअत पर न तकवा पर न ज़ुहद व इत्तिक़ा पर है

हमारा नाज़ जो कुछ है मुहम्मद मुस्तफा पर है

नबी की इताअत व महब्बत की चाहत

इताअत तीन तरह की होती है इताअत डर की, इताअत लालच की, इताअत मुहब्बत की, यहां मकसूद है मुहब्बत की इताअत, क्योंकि डर या लालच की इताअत तो मुनाफेकीन भी करते थे | ख्याल रहे कि मुहब्बत तीन किस्म की है छोटे से मुहब्बत यानी सफकत, दूसरी बराबर वाले से मुहब्बत, तीसरे बड़े से मुहब्बत जो अजमत की नीयत से हो मालूम हुआ कि मुहब्बत अजमत की नीयत से होनी चाहिये। फिर अजमत दो किस्म की है दीनी और दुनियावी से, मालूम हुआ कि हुजूर की अजमत दीनी चाहिये यानी रिसालत की बिना पर मुहब्बत व अजमत चाहिये न कि बढ़ा भाई समझ कर। (शाने हबीबुर्रहमान, पेज 32)

मुहब्बत के 2 अकसाम

1. (पहला) हक़ से मुहब्बत और दूसरा बातिल से मुहब्बत

हक़ से मुहब्बत: अल्लाह त'आला की रज़ा के लिए हक़ीक़ी अल्लाह त'आला से , अल्लाह त'आला के रसूलों से, तमाम अम्बिया व औलिया व मोमिनीन व दीनदारो से मुहब्बत करना। ये मुहब्बत आख़िरत तलबी यानी अल्लाह त'आला की रज़ा के लिए खास तौर पर होनी चाहिए अगर्चे दुनियावी जरूरियात भी शामिल हो।

2. **बातिल से मुहब्बत**: यानी नफ़्सानी मजे के लिए दुनिया, शोहरत, दौलत, ग़ैर महरम औरत का हुसुल के लिए शरीयत के दायरे से हटकर किसी से मुहब्बत करना ये नाज़ायज़ फेल (काम) है। ऐसे लोगों के दिल हक़ वालों की मुहब्बत से महरूम होता है और ईमान में कमजोरी का सबब बनता है। यही लोग दुनियादार है जिसमे से बहुत सारे काफ़िर व मुशरिक हुए, बहुत मुनाफ़िक़ हुए, बहुत फ़ासिक़ व फ़ाज़ीर हुए आप अपना जायजा ले।

मूहिब के 2 अकसाम

जानना और मानना चाहिए कि मुहिब की 2 किस्में है 1. रश्मि मूहिब (जबानी मुहब्बत का दावेदार) और 2. हक़ीक़ी मूहिब (दिल से मुहब्बत करने वाला)

1. रश्मि मूहिब (जबानी मुहब्बत का दावेदार): जबानी मुहब्बत सिर्फ झूठा दावा है जो दलील पेश किए बग़ैर हर काफिर, मुर्तद, मुनाफ़िक़ व फ़ासिक़ फ़ाज़ीर और सुल्हकुल्ली के जबान से ज़ाहिर होता है मगर उसके दिल मे बातिल की मुहब्बत छुपी होती है ऐसो लोगों के दिलों में तो खालिस्तन दुनिया की मुहब्बत और नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़लबा होता है। इस दौर में ऐसे लोगो को मुआशरे में ऐनुल यकीन के साथ देखा जा सकता है जो काफ़ी तादाद में मौजूद है जिसकी तमाम वक़्त, हिम्मत, ताक़त, दौलत, जान व माल सिर्फ बातिल (यानी नफ़्स, शैतान व दुनिया) के तलब में खर्च होते है।

2. हक़ीक़ी मुहब्बत (दिल से मुहब्बत करने वाला): यानी हक़ वालों से दिली मुहब्बत वो भी अल्लाह त'आला की रज़ा के लिए न कि दुनिया हासिल करने के लिए। जानना चाहिए कि मुहब्बत दो दिलो के बीच एक कैफ़ियत का नाम है जिसका ताअल्लुक जबान से नहीं बल्कि सिर्फ दिल से है हक़ीक़ी मुहब्बत दिल से किया जाता है जिसका अलामत यह है कि तमाम आज़ा महबूब (अल्लाह त'आला व नबी ﷺ) की तरफ मुतवज्जो हो और मूहिब कि तमाम कोशिशे, वक़्त, हिम्मत, इताअत, सुन्नत, क़ुव्वत, जान, माल व दौलत सब नबी ﷺ (महबूब) के फ़रमान के मुताबिक उसी के रज़ा के लिए ख़र्च होना चाहिए।

हक़ीक़ी मुहब्बत की अलामत

जो शख़्स किसी से मुहब्बत करता है वह अपने महबूब का मुतीअ व फरमां बरदार होता है लिहाज़ा जो शख़्स मुहब्बते रसूल का दावा करे उस पर हुजूरे अकदस का यह हक बनता है कि वह हुज़ूर की मुकम्मल पैरवी करे। यानी आप की सुन्नतों पर अमल करे, आप की बात और सीरत की पैरवी करे। जिन चीज़ों के करने से हुजूर ने मना फरमा दिया है उनके करने से बचे और जिन कामों के करने का हुक्म दिया है उन पर अमल करने में पहल करे और तंगदस्ती व खुशहाली और खुशी व ग़मी ग़र्ज़ कि हर हाल में हुज़ूरे अक़दस की ही सीरते तय्यबा को अपनाए।

किसी शायर ने कहा हैः अगर तेरी मुहब्बत सच्ची होती तो ज़रूर इताअत (पैरवी) करता क्यों कि मूहिब अपने महबूब का फ़रमाबरदार होता है।

हक़ीक़ी मुहब्बत ही ईमान है

हक़ को हक़ और बातिल को बातिल मानना ईमान है। मुहब्बत दिल की कैफ़ियत का नाम है जो इंसान को मानने के क़ाबिल बनाता है यानी मनवाता है नबी ﷺ की ज़ात व सिफ़ात को बग़ैर कोई ऐब या नुक्स निकाले दिल से मानना बग़ैर मुहब्बत का नामुमकिन है यानी हक़ मानने के लिए मुहब्बत दरकार है। हक़ की पहचान बताने और तमाम हक़ को लाने वाले हमारे नबी ﷺ है और इस बात को मान लेना ही ईमान है लेकिन इस बात को मानने के लिए हुज़ूर ﷺ से सबसे बढ़कर मुहब्बत करना होगा इसलिए मुहब्बत ही ईमान है। (मुसन्निफ़)

हुजूर से सबसे ज्यादा महब्बत क्यों?

ज़ाहिर है कि हुज़ूर सरवरे अंबिया महबूबे किब्रिया ने अपनी उम्मत के लिए जो जो मशक्कतें उठाई उनका तकाज़ा और एहसान का बदला यह है कि उम्मती अपने नबी से सबसे बढ़ कर महब्बत करे यह काम फ़र्ज़े ऐन और कामिल ईमान है। यही महब्बत मुसलमान को सुन्न्त पर अमल करने के लायक बनाता है। मगर अफ़सोस आज हम बातिल शय की महब्बत मे मश्रूर है और सुन्नत से बहुत दूर है ।(मुसन्निफ़)

मुहब्बते रसूल की अक़्ली दलील

ख़्याल रहे हुज़ूरे अकदस से मुहब्बत का शरई हुक्म तो अपनी जगह पर मुसल्लम है ही इसके अलावा अक़्लन भी हुज़ूर मुहब्बत किए जाने का सब से ज़्यादा हक रखते हैं। चुनांचे आप गौर करें तो मालूम होगा मुहब्बत के तीन असबाब होते हैं “हुस्न व जमाल” “जूद व नवाल” “जाह व जलाल” जिस शख़्स के अन्दर इन असबाव में से कोई एक ही सबव मौजूद हो तो लोग उस से मुहब्बत करते हैं। अब आप अगर गौर करें तो हुज़ूरे अकदस ख़ूबियों की जामेअ है लिहाज़ा आप की ज़ाते गिरामी इन तीनों ही सब से ज़्यादा मुहब्बत किए जाने के लाइक हैं। रिवायतें से साबित है कि हुज़ूरे अक़दसते की मुक़द्दस जाते

गिरामी के अन्दर असबाबे मुहब्बत अपनी पूरी जलवा सामानियों के साथ मौजूद हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रदिअल्लाह त'आला त'आला अन्हु फ़रमाते हैं: तर्जमा: मैं ने रसूलुल्लाह से ज्यादा हसीन व खूबसूरत किसी को न देखा।

दिल उल्फ़त-ए-सरकार बसाने के लिए है

जाँ आपकी हुरमत पे लुटाने के लिए है

महब्बत किनसे किया जाए

हज़रते अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह त'आला त'आला ने जिन चीजों से मुहब्बत रखने का हुक्म दिया है उन्हें महबूब रखो और जिन चीज़ों से परहेज़ का हुक्म दिया है उन से परहेज करो। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 39, पेज 259)

औलिया अल्लाह त'आला से महब्बत की चाहत

क़ुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है: (तर्जुमा) **ऐ महबूब तुम फ़रमाओ मैं इस (नेअमतों व फ़ज़्ल) पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत (यानी औलिया अल्लाह त'आला से मुहब्बत करने का हुक़्म है),** (सूरह शूरा , आयात 23)

औलिया अल्लाह त'आला दिल को बनाते है

मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ नईमी अलैहिर्रहमा लिखते है “जंग आलूद लोहे को भट्टी की जरूरत है, और जंग आलूद दिलों के लिये सोहबते औलिया व इबादात व रियाज़त दरकार, मगर तासीर (असर) में सोहबत औलिया तेज़ तर (फ़ास्ट) है तिलावते कुरआन पाक स्याही कलब को आहिस्ता आहिस्ता दूर करती है। मगर अल्लाह त'आला वालों की नजरे करम आन की आन (फौरन) में काया पलट देती है।(शाने हबीबुर्रहमान, पेज 232 हिंदी)

महब्बते रसूल की 5 निशानियाँ:

वाज़ेह रहे कि महब्बते रसूल का दावा करने वाले तो बहुत लोग हैं मगर याद रखिए कि उसकी चन्द निशानियाँ हैं जिनको देख कर इस बात की पहचान होती है कि वाकई उसके दिल में महब्बते रसूल का चिराग रौशन है उन अलामतों में से चन्द यह हैं:

(1) आपके हुक्म और जो कुछ आप करते थे की पैरवी, आपकी सुन्नतों पर अमल, आपकी मना की हुई चीजों में आपकी फरमाँ-बरदारी गर्ज़ शरीअते मुतहहरा पर पूरे तौर पर आमिल हो जाना।

(2) आपका ज़िक्र शरीफ खूब खूब करना बहुत ज़्यादा दुरूद शरीफ पढ़ना, आपके ज़िक्र की मजालिसे मुकद्दसा मसलन मीलाद शरीफ और दीनी जलसों का शोक और उन मजलिसों में हाज़िरी।

(3) हुज़ूर और तमाम उन लोगों और उन चीजों से महब्बत और उनका अदब व एहतराम जिनको रसूलुल्लाह से निस्बत व तअल्लुक हासिल है। मसलन सहाबा ए किराम, अज़वाजे मुतहहरात, अहले बैते अतहार, शहरे मदीना ए अनवर, मस्जिदे नबवी, आपके छोड़े हुए तबर्रुकाते शरीफा, कुरआन मजीद व अहादीसे मुबारका, सबकी त'अज़ीम व तौक़ीर और उनका अदब व एहतराम करना।

(4) हुज़ूर के दोस्तों से दोस्ती और उन के दुश्मनों यानी बद-दीनों, बद-मज़हबों से दुश्मनी रखना।

(5) दुनिया से बेरगबती और फकीरी को मालदारी से बेहतर समझना, इसलिए कि रसूलुल्लाह का इर्शाद है कि मुझसे महब्बत करने वाले की तरफ गरीबी और मुहताजी उससे भी ज्यादा जल्दी पहुँचती है जैसे कि पानी का सैलाब अपने हद की तरफ। (तिर्मिज़ी)

बाब 5

चाहत बदलने के अमली तरीके

1. इल्मे दीन से चाहत मे बदलाव

चाहत बदलने का पहला क़दम इल्म है क्योंकि इंसान जितना जानता और पहचानता है उसी की चाहत उसके दिल मे पैदा होती है अगर इल्म दुनिया का होगा तो दुनिया चाहेगा और अगर इल्म दीन का होगा तो दीन चाहेगा। इल्मे दीन सीखने की एक वजह ये भी है की इंसान दीन की चाहत रखे |

अगर दुनिया उसकी मंज़िल बन गई है, तो उसे क़ुरआन और हदीस की रौशनी में चाहत बदलनी होगी। अल्लाह त'आला की रज़ा, रसूलुल्लाह ﷺ की इताअत और आख़िरत की कामयाबी को अपनी सबसे बड़ी चाहत बना लेना ही असली बदलाव है।

2. रोज़ाना का मुहासबा

हर दिन सोने से पहले अपने दिल और आमाल का हिसाब लें। आज कौन-सा काम अल्लाह त'आला की रज़ा के लिए किया और कौन-सा नफ़्स या दुनिया की चाहत में किया? रोज़ाना का मुहासबा इंसान को ग़फ़लत से बचाता और इस्लाह का रास्ता दिखाता है।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

तर्जुमा : **"अक़्लमंद वह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करे और मौत के बाद की ज़िंदगी के लिए अमल करे।"**(जामिअ तिर्मिज़ी: 2459, हसन)

3. ज़िन्दगी पर ग़ौर व फ़िक्र

अपनी ज़िन्दगी, मौत, क़ब्र और आख़िरत पर ग़ौर करना दिल को नर्म करता है। जब इंसान सोचता है कि एक दिन उसे अल्लाह त'आला के

सामने जवाब देना है, तो उसकी दुनियावी चाहतें कम होने लगती हैं और आख़िरत की फ़िक्र बढ़ जाती है।

4. सच्चों की सोहबत

इंसान अपने दोस्तों और सोहबत से बहुत प्रभावित होता है। नेक, परहेज़गार और अल्लाह त'आला वालों की सोहबत ईमान को मज़बूत करती है और दुनिया की मोहब्बत को कम करती है। अच्छी सोहबत चाहतों को बदलने का सबसे असरदार ज़रिया है।

5. औलिया की तालीम

औलिया-ए-किराम की ज़िन्दगियाँ तज़किया-ए-नफ़्स, इख़्लास और अल्लाह त'आला की मोहब्बत का बेहतरीन नमूना हैं। उनके अक़वाल और तालीमात का मुताला करने से दिल में अल्लाह त'आला की रज़ा की चाहत पैदा होती है और दुनिया की मोहब्बत कम होने लगती है।

6. हिकायत-ए-सालिहीन

नेक लोगों और बुज़ुर्गाने-दीन के वाक़ियात पढ़ने और सुनने से इंसान को इबरत मिलती है। उनकी कुर्बानियाँ और अल्लाह त'आला के लिए की गई मेहनत दिल में दीन की चाहत और अमल का जज़्बा पैदा करती है।

7. दुआ और इस्तिग़फ़ार

चाहतों को बदलना केवल इंसान की ताक़त से मुमकिन नहीं, बल्कि अल्लाह त'आला की तौफ़ीक़ से होता है। इसलिए हमेशा दुआ करें कि अल्लाह त'आला दिल को अपनी मोहब्बत से भर दे और इस्तिग़फ़ार करते रहें, क्योंकि गुनाह दिल को सख़्त और दुनिया की मोहब्बत को मज़बूत कर देते हैं।

8. आख़िरत की फ़िक्र

क़ब्र, हश्र, हिसाब, जन्नत और जहन्नम को याद रखना दिल को ग़फ़लत से जगाता है। जब आख़िरत की फ़िक्र दिल में बस जाती है, तो दुनिया की चाहत अपने आप कम होने लगती है और इंसान नेक अमल की तरफ़ बढ़ता है।

हज़रत अबू सुलैमान रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते है

दुनिया की ख़्वाहिशों से वही रुकता है, जिसके दिल में आख़िरत की फ़िक्र होती है। (हवाला: मुकाशफ़तुल-क़ुलूब, पेज 206)

9. अल्लाह त'आला का ज़िक्र

अल्लाह त'आला का ज़िक्र दिल की ग़िज़ा और उसकी ज़िन्दगी है। ज़िक्र से दिल को सुकून मिलता है, ग़फ़लत दूर होती है और अल्लाह त'आला की मोहब्बत बढ़ती है। जिस दिल में ज़िक्र ज़्यादा होगा, उस दिल में दुनिया की मोहब्बत कम और अल्लाह त'आला की रज़ा की चाहत ज़्यादा होगी।

"सुन लो! अल्लाह त'आला के ज़िक्र ही से दिलों को सुकून मिलता है।"(सूरह अर-रअद, 13:28)

ख़ुलासा

चाहत बदलना एक दिन का काम नहीं, बल्कि लगातार मुहासबा, तौबा, ज़िक्र, इल्म, नेक सोहबत और आख़िरत की फ़िक्र का नतीजा है। जब इंसान इन अमली तरीक़ों को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बना लेता है, तो उसका दिल दुनिया से हटकर अल्लाह त'आला की रज़ा की तरफ़ मुड़ जाता है, और यही असली कामयाबी की शुरुआत है।

इस किताब को पढ़ना ना भूले

